सत्य मार्ग

تعال إلى الحق

लेखक
अताउर्रहमान सईदी

إعداد

عطاء الرحمن السعيدي

تحت إشراف قسم البحوث والترجمة
بمكتب توعية الجاليات بالأحساء

भूमिका

इस संसार मे जीवन यापन की सुविदा प्राप्त करने के लिये मनुष्य की बहुत सी आवश्यकतायें हैं | जिसका वह अपने अपने आधार से प्रबंध करता है | किन्तु इस विषय पर विचार करने से पता चलता है कि मनुष्य की आवश्यकतायें दो प्रकार की हैं |

१. जीवन साधन |

२. सौभाग्य साधन |

जीवन के साधनों में से खाना, पीना और वीवाह करना है किन्तु सौभाग्य के माध्यम असंख्य है | उन में से दो महत्व पूर्ण हैं एक शारण एवं शान्त दूसरा संतोष है ताकि मनुष्य संतोषजनक एवं संतुष्ट तथा सुवाद जीवन शरण एवं शान्त व्यातीत कर सके | प्रन्तु प्रश्न यह है कि इन वस्तुओं को कैसे प्राप्त किया जाये ?

- माता पिता द्वारा
- सरकार द्वारा
- व्यक्तिगत रूप से

हो सकता है माता पिता बचपन में तुम्हारे लिये खाने पीने का प्रबंध कर दें और बडे होने के बाद तुम स्वंय अपने लिये रोटी कपडा एवं मकान का प्रबंध कर लो | माल

कमा कर विवाह करलो तथा जीवन के अन्य महा सौभाग्यों का प्रबंध कर लो | उदाहरणस्वरूप तुम्हे यातायात साधनों की सुविधा होजाये | अच्छा घर,और बहुत सारी चीजैं तुम्हें मिल जायें फिर भी यह प्रश्न होता है कि क्या माल द्वारा मनुष्य को सौभाग्य प्राप्त हो सकता है ?

अगर हम वर्तमान या भूतकाल के धनिकवर्ग तथा पूँजीयतियों की जीवन का ध्यानपूर्वक अध्ययन करैं तो हमें ज्ञान होगा कि असंख्य लोग जिन्हें अल्लाह ने अधिक से अधिक सम्पति और जीवन की समस्त सुविधाओं से मालामाल किया था | जीवन में जिन के सारे सपने साकार हुये थे जिन के यहाँ किसी वस्तु की कमी नहीं क्या उन्हें वास्तविक सुख प्राप्त हो सका | विचार करने पर वास्तविक्ता कुछ और नजर आती है | उनकी जीवन कठनाई,दुख,अधीरता,व्याकुलता एवं नानाप्रकार की चिन्ताओं से भरी होती है | हर समय वह शोकाकुल रहते हैं | एक पल भी प्रसन्नचित नहीं रहते,कुछ लोग तो आतमहत्या भी कर लेते हैं | कुछ को ऐसा रोग लग जाता है कि अगर वे अपना सारा धन दवादारू में लगा दें फिर भी वे स्वास्थ को तरस्ते रहते हैं उनका धन कुछ भी रोग दूर करने में उन्हें लाभ नहीं देता, तथा कुछ तो ऐसे हैं कि अपने माल के खो जाने या लूट मार के डर से पूरी नींद सो नहीं पाते, कुछ को ऐसा मानसाशास्त्ररिक रोग लग जाता है कि वह उसका कांण नहीं जान पाता ,वह बार बार मानसिक चिकित्सकों

एवं वैध का चक्कर लगाता है किन्तु उसे कोई लाभ नहीं होता | वह घुट घुट कर जीता है ऐसे बहुत से लोग इस संसार में हैं जिनको हम अपनी आखों से देखते या उनके बारे में सुनते हैं | अतः इस से हमें ज्ञान होता है कि धन दौलत, सौभाग्य साधन नहीं हैं | अगर धन से सौभाग्य प्राप्त होता तो संसार के धनवान या देश के राजा महाराजा बड़ी सौभाग्य से जीवन बिताते | जबकि ऐसा नहीं है |

हम ऊपर लिख चुके हैं कि वास्तविक सौभाग्य के मूल्य साधन एक शारण, शान्त एवं संतोष भरा जीवन है | हम यह बात भी जानते हैं कि हर देश में शान्त शासन या सत्ता संचित करती है | प्रन्तु एक सौभाग्य शाली जीवन का सुख सत्ता नहीं दे सकती | अगर ऐसा होता तो संसार में कोई किसी प्रकार का दुखी न होता | इस लिये कि सौभाग्य एक बहत बड़ी प्रसन्नता है जो एक महान गुप्त भेद है |

अब सोचना यह है कि वह कौन सी वस्तु है कि जिसके आधार पर इस संसार में हमें सौभाग्य एवं संतोष मिल सकता है ?

क्या ऐसा नहीं है ? कि एक मनुष्य को उस समय शान्त का आभास होता है जब उसका आचरण या चरित्र उसके विश्वास के अनुसार एवं अनुरूप हो | अतः उदाहरण स्वरूप तुम जब एक दुर्बल मनुष्य की सहायता सड़क पार कराने के लिये करते हो तो तोम्हें हार्दिक शान्त एवं

आंतरिक सौभाग्य अनुभव क होता है । इस कारण कि उस मनुष्य की सहायता आप के विश्वास के अनुकूल है कि एसे लोगों की सहायता होनी चाहिये ।

इसी प्रकार जब आप किसी भी कार्य में सफलता का विश्वास रखते है तो आप उस सफलता को प्राप्त करने का साधन भी खोजते हैं एवं उसे प्राप्त करने का प्रयास भी करते हैं । और जब सफलता मिल जाती है तो आप का ह्रदयं शान्त होजाता है एवं आप को हार्दिक सौभाग्य मिल जाता है । क्यों कि आपका चरित्र सफलता के महत्तव के विश्वास के अनुसार है । यदि आप असफल हो जाते तो आप शोकाकुल होते इस लिये कि आप ने सफलता के महत्तव के विषय में अपने विश्वास के अनुसार साधन का खोज नहीं किया अतः आप का चरित्र आप के विश्वास के विपरीत हो गया ।

किन्तु हमें यह भी न भूलना चाहिये कि कुछ सौभाग्य कुछ समय के लिये होते है । आप ध्यान दें एक चोर जब चोरी करने के लिये निकलता है और वह स्वयं अपने उद्देश्य में सफल हो जाता है तो कुछ समय के लिये वह सौभाग्य शाली महसूस करता है विशेष रूप से जब वह चोरी का धन खर्च करता है और आवश्यकता के सामान खरीदता है। फिर भी उस चोर की अन्तरात्मा उसे मलामत करती रहती है और चोर आत्मा की उस आवाज़ को नहीं छिपा सकता जो निकलती है । अन्त में वह महसूस करता है कि चोरी

अच्छा कार्य नहीं है । इसी प्रकार व्यभिचार एवं हत्या का उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं ।

नि सन्देह शान्त सौभाग्य में एक महत्तव पूर्ण आचरण करने वाला है । यह एक आतरिक आचेतना है जिसकी कोई याचना नहीं कर सकता और न ही कोई इसे खरीद सकता ।

हाँ यह हो सकता है कि कुछ निर्धन आप को इस संसार में एसे मिलैं जिन के पास एक दिन का खाना भी न हो । तथा ऐसा भी हो सकता है कुछ सौभाग्य की याचना करने वाले मिलैं किन्तु आप उन की स्थिति से यह अनुमान लगा सकते है कि वे अपनी याचना के विरुद्ध हैं ।

हम पहले ही कह चुके हैं कि मनुष्य शान्त एवं सौभाग्य का अनुभव उस समय करता है जब उसका चरित्र उसके विश्वास के अनुसार हो । प्रन्तु वह कौन सी वस्तु है जो मनुष्य के विश्वास की रचना करती है ताकि उसका आचरण उस के विश्वास के अनुसार हो ?

हर मनुष्य के विश्वास की रचना उसके जीवन लक्ष्यों से होती है । जब उसे अपनी जीवन आचरण का ज्ञान प्रप्त हो जाता है तो उसके यहाँ विशेष कल्पना की रचना होती है जिस पर वह आस्था तथा विश्वास करता है । उदाहरणस्वरूप जब किसी मनुष्य का उद्देश्य ड़ाक्टर बनना हो तो उसकी कल्पना में कुछ ऐसे लक्ष्य आते हैं जिसका

वह आस्था करता है । तथा जिस पर उसे पूर्ण विश्वास होता है और फिर वह डाक्टर बनने के वासते अपने लक्ष्य के अनुसार चलता है इसी प्रकार जब कोई मनुष्य अपने जीवन का उद्देश्य अच्छी तरह जान जाता है तो उसकी कल्पना में बहुत सी चीज़ों की रचना हो ती है जिसकी वह खोज करता है ताकि वह अपने उद्देश्य में सफला हो ।

किन्तु मनुष्य यह कैसे जान पाये कि जीवन में उसका आचरण क्या है ? क्या उस आचरण को वह स्वंय निश्चित करे गा ? अगर वह जान जाए तो उस में सफलता प्राप्त करने के लिये वह कैसे प्रयास करे ताकि उसका आचरण उसके विश्वास के अनुसार हो । जिस से वह उस सौभाग्य एवं शान्त को पाले जिसकी बहुत से सज्जन कामना करते हैं । इस और इस प्रकार के अन्य प्रश्नों का उत्तर हम अगले पाठ में दें गे ।

हमारा जन्म क्यों हुवा ?

इस संसार में मन्नचिन्तन करने के बाद पता चलता है कि विभिन्न तथा नानाप्रकार की रचनीय पाई जाती हैं । अगर कोई व्यक्ति सारी रचनाओं को गिनना चाहे तो गिन नहीं सकता, इन रचनाओं में से बहुत सी ऐसी चीज़ें भी हैं जिन को हम प्रतिदिन अपनी आखों से देखते हैं एवं उन से लाभ उठाते हैं । उदाहरणस्वरूप सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, धरती,

आकाश | खाने पीने का सामान, मनुष्य में नर और नारी,विभिन्न प्रकार के पशु आदि,यह तथा इन जैसी कितनी ऐसी आश्चर्य जनक बड़ी बड़ी रचनायें हैं जिन को देख कर मानव बुद्धि आश्चर्यचकित रह जाती है |

संसार की समस्तरचना में महाविराट सृष्टि स्वयं मनुष्य है | जिसका कारण यह है कि इस के पास एक ऐसी अनोखी चीज़ है जो किसी भी सृष्टि के पास नहीं है | और वह है बुद्धि | मनुष्य अपनी इसी मानसशक्ति एवं बुद्धि का प्रयोग कर के जहाँ पहुंच गया ? इसका अनुमान आप स्वयं कर सकते हैं |

निः सन्देह हमें ज्ञान है कि संसार की सारी सृष्टि मनुष्य की सेवा के लिये बनाई गई है | किन्तु यह प्रश्न बार बार उठता है कि संसार की अन्य रचनाओं के साथ हमारी रचना क्यों हुई ? क्या जिसने हमको रचा है उसके समक्ष हमारे जन्म का कोई उद्देश्य भी है या नहीं ? यह एक महान प्रश्न है जिस पर हर मनुष्य को गहरा विचार करना चाहिये!

जब इस संसार का कोई भी बुद्धिमान कोई भी कार्य बिना उद्देश्य के नहीं करता | जो भी कार्य वह करता है उसका कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है | उदाहरणस्वरूप हम भोजन करते हैं ताकि हमारा शरीर बलवान रहे तथा भोजन द्वारा हमारे शरीर को शक्ति मिले |

हम कोई व्यापार करते हैं हमरा उद्देश्य माल कमाना होता है। हम स्नान करते हैं, हमारा उद्देश्य शरीर की स्वास्थ्य एवं पवित्रता है। हम विवाह करते हैं। हमरा उद्देश्य वंश बढ़ाना एवं ठीक रूप से अपनी कमिच्छाओं की त्रिप्ति प्राप्त करना है। इनके अतिरिक्त हम जो भी कार्य करते हैं उसका कोई न कोई अवश्य उद्देश्य होता है। क्या कोई मनुष्य यह कह सकता है कि उसका कोई भी कार्य या गति बिना उद्देश्य है ?

जब हम कोई भी कार्य बिना उद्देश्य के नहीं करते तो यह स्पष्ट है कि जिसने हमैं जन्म दिया एवं रचा है उसका भी कोई न कोई उद्देश्य आवश्य होगा। बिना उद्देश्य हम भी नहीं पैदा किये गये हैं।

अब प्रश्न यह है कि किस उद्देश्य के लिये हम रचे गये हैं ? क्या हमरा जन्म इस लिये हुआ है ताकि इस संसार में हम केवेल कमायें खायें ? क्या हमारी रचना केवल इस लिये हुई है ताकि विवाह करके पतनी से अपनी कमवासना की आग बुझायें ? क्या हम रचे गये है कि हम एक दूसरे मनुष्य पर अन्याय एवं अत्याचार करैं ? क्या हम रचे गये हैं ताकि अन्य लोगों की केवल सेवा करैं ? या हम निरर्थ बिना उद्देश्य रचे गये हैं ?

अगर किसी की सोच यह है कि वह बिना उद्देश्य रचा गया है। तो अनुभव करने के लिये अपने शरीर की

अंगों मे से कोई भाग जैसे एक आँख फोड़ ले फिर देखे कि क्या वह आँख बेकार बिना उद्देश्य रची गई थी ? या अपने कान के छिद्र पूर्ण बन्द कर ले ताकि कान के रचने का उद्देश्य जान सके। या अपनी सारी उंगलियाँ काट ले ताकि उसका पीड़ा जान सके।

आप क्या कहते हैं ? अगर कोई ऐसा कर ले,क्या संसार के पूरे लोग यही नहीं कहैं गे ? कि ऐ मूर्ख तुम्ने ऐसा कर के इन अंगों के उद्देश्य एवं नीतियों से खिलवाड़ किया। यदि कोई मनुष्य गंभीरता से अपने शरीर के बारे में विचार करे तो उसे यह निश्चित कहना होगा कि उसे कई वर्ष किसी चिकित्स महाविधालय में शिक्षा प्राप्त करना पड़ेगा ताकि शरीर के हर अंग के रचने का सही उद्देश्य ठीक से जान सके।

आप अगर किसी निपुण मनुष्य के अंगों के बारे में जानकारी रखने वाले ड़ाक्टर से पूछैं कि मनुश्य के किसी भी अंग के रचने का उद्देश्य क्या है ? तो वह उत्तर दे गा कि यह अंग इस वासते रचा गया है ताकि वह ऐसा काम करे जो पूर्ण रूप से मनुष्य के शरीर की नीतियों के अनुकूल हो,अतः मुंह पूरे शरीर के लिये भोजन खाता है। ह्रिदयं पूरे शरीर के वासते रक्त पहुंचाता है। इस जानकारी के बाद क्या कोई भी बुद्धिमान यह कह सकता है कि मनुष्य बेकार रचा गया है ?

आप उस व्यक्ति के बारे में क्या कहैं गे जो अपने उस घर का उद्देश्य नहीं जानता जिस में वह रहता है ? या जिस शाय्या पर सोता है ? या जो वस्त्र पहनता है ? निश्चित बात है आप यही कहैं गे कि वह संसार का सब से बड़ा अज्ञान, मूर्ख मनुष्य है। किन्तु आप को यह भी जानकारी होनी चाहिये कि कुछ इस से भी बड़े अज्ञान हैं जो अपनी दोनों आँख, मुंह, दोनों कानों, एवं सिर आदि की नीति एवं उद्देश्य नहीं जानते। और इस से भी बड़ा अज्ञान वह है जो अपने पूरे शरीर तथा अपने रचने का उद्देश्य एवं नीति न बूझ सके। तथा साथ ही साथ यह बात भी स्पष्ट है कि किसी भी रची हुई चीज़ की नीति एवं उद्देश्य का ज्ञान उसके जन्मदाता या उसके संदेष्टा के बातने से होता है। आप ने कोई चीज़ किस विशेष उद्देश्य से रची है। हम उसको सत्य प्रकार उस समय तक नहीं जान सकते जब तक आप न बतायें या आपका कोई संदेष्टा आकर उस की सही सूचना न दे। इसी प्रकार हम अपने रचे जाने का उद्देश्य भी उस समय तक नहीं जान सकते जब तक कि हमको रचने वाला या उसका कोई संदेष्टा न बताये। जब हम इस बात से सहमत हैं तो आइए देखा जाये कि जिस महान शक्ति विश्वकर्ता ने हमको तथा आप को निःसंदेह खनखनाती मिट्टी के सार से उत्पन्न किया। फिर उसे वीर बना कर सुरक्षित स्थान में रख्खा फिर वीर को जमा हुआ रक्त बना कर लोथड़े को माँस का टुकड़ा बनाया फिर माँस के टुकड़े में अस्थियाँ बनायीं ,फिर अस्थिों को माँस पहना

दिया , फिर एक अन्य रूप में उसे उत्पन्न कर दिया | उस ने हमें उत्पन्न करने का कोई उद्देश्य बताया है ? हाँ निःसंदेह उस ने बताया है किः (मैं ने जिन्नात एवं मनुष्यों को मात्र इसीलिए पैदा किया कि वे केवल मेरी पूजा एवं इबादत करें | न मैं उनसे जीविका चाहता हूँ न मेरी यह इच्छा है कि ये मुझे खिलायें |अवश्य अल्लाह तो स्वयं जीविका प्रदान करने वाला शक्तिशाली एवं बलवान है |) (पवित्र कुर्आन : सूरह ज़ारियात ५६.५७.५८)इस से यह स्पष्ट हो गया कि हमारे पालनहार ने हमैं क्यों पैदा किया है ? तथा वह धर्मविधान हम से क्या चहता है ? अब हम इसको अच्छी तरह जान गये कि सम्पूर्ण मानव और जिन्न केवल अपने रचयिता ही की उपासना एवं आज्ञापालन के लिए पैदा किये गये हैं ! अर्थात इसमें सारे मानव को उनके जीवन का उद्देश्य स्मरण कराया गया है, यहाँ यह भी स्पष्ट हो गया कि अल्लाह की उपासना तथा आज्ञापालन से उसका उद्देश्य यह नहीं है कि मानव उसे कमा कर खिलाये, जैसा कि दूसरे स्वामियों का होता है, अपितु जीविका के सभी कोष तो केवल उसी के पास हैं,उसकी उपासना तथा आज्ञापालन से स्वयं मानव ही का लाभ होगा |

रचयिता का अस्तित्व

हम ऊपर अपने रचे जाने का उद्देश्य जान चुके हैं.प्रन्तु यह जानना भी आवश्यक है कि रचयिता का कोई अस्तित्व है कि नहीं ?

मेरे प्यारे मित्रो! अगर हम केवल अपने अस्तित्व पर मन्नचिन्तन करैं तो हमें ज्ञान हो गा कि हमारा कोई न कोई रचयिता आवश्य है । इस लिए कि इस संसार में कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसका कोई रचयिता न हो या वह स्वंय बन गई हो ? क्यों कि सत्ताहीन कुछ नहीं कर सकता । तो यह भी असंभव है कि कोई काम बिना करने वाले के हो तथा यह भी आसंभव है कि सत्ताहीन कुछ करे क्यों कि सत्ताहीन का कोई अस्तित्व नहीं, अब हम देखें यह आकाश, धर्ती, सूर्य, चन्द्र, जल या इसके अतिरिक्त जो भी चीज़ैं इस संसार में हैं जिनका हम प्रतिदिन प्रयोग करते है । क्या अपने आप बन गईं या इनका कोई रचयिता है ? कोई भी बुद्धिमान उसका धर्म कुछ भी हो यह नहीं कहसकता कि संसार की सारी चीज़ैं अपने आप बन गई हैं । अगर कोई यह कहे तो सारे लोग उसको मूर्ख एवं नादान कहैंगे । हम आप से यह प्रश्न करते हैं कि क्या आप बिना किसी पैदा करने वाले के स्यवं ही पैदा हो गये हैं ? या स्यवं पैदा करने वाले हैं ? अर्थात यदि वास्तव में ऐसा है तो फिर किसी को यह अधिकार

नहीं कि आप को किसी बात का अदेश दे या रोके। किन्तु जब ऐसा नहीं है,अपितु आप का एक स्रष्टा है।

हम जब जगत के प्रबन्ध पर मन्नचिन्तन करते है तो हम को पता चलता है कि संसार का सारा सिस्टम एक दृढ़ प्रबन्ध के आधार पर संचालित है जिस से हर बुद्धिमान यह कहने पर विवश है कि इस जगत का स्रष्टा इस के संचालान पर शत्किमान है और वह सदैव मौजूद है !

इस जगत की चीजों को देख कर हम यह भी जानते हैं कि रचना एवं रचयिता तथा कार्य एवं कारक कारने वाले के बीच एक दृढ़सम्बन्ध होता है। जब हम किसी भी रचना या उतपादन में मन्नचिन्तन करैं गे तो हमें उस से उस रचयिता के कुछ विशेषताओं तथा उस के कुछ शक्ति का ज्ञान हो जायें गे। जगत के प्रबन्ध पर ध्यान देने से जहाँ यह पता चलता है कि कोई न कोई इसका रचयिता है वहीं पर यह भी मालूम होता कि निःसन्देह रचयिता वही हो सकता है जो गुप्त एवं प्रकट का जानने वाला, क्षमा तथा दया करने वाला हो। जो स्वामी,अत्यन्त पवित्र,सभी दोषों से मुक्त,शान्त प्रदान करने वाला,महा रक्षक,प्रभावशाली, सर्वशक्तिमान,महान एवं पवित्र हो,जो स्यवं जीविका प्रदान करने वाला शक्तिशाली एवं बलवान हो। जो सभी अधिपतियों से श्रेष्ठ अधिपति हो। जो अत्याधिक कृपा वाला हो। जो अपनी इच्छा अनुसार हर काम करने का अधिकार रखता हो। जो जीवित एवं सबकी सहायता आधार हो। जिसे न ऊँघ

आये न निद्रा । धरती और आकाश सभी चीजें जिसके आधीन हों । जो बहुत महान और बहुत बडा हो । जो बीजों एवं गुठलियों को फाडकर अंखुआ निकालता हो,जो सजीव को निर्जीव से एवं निर्जीव को सजीव से निकालता हो । जो पौ फाडने वाला हो,जिसने रात्रि को विश्राम के लिये एवं सूर्य तथा चन्द्रमा को हिसाब लगाने के लिये बनाया हो । जिसने हमारे लिये तारे बनाये ताकि थल जल के अंधेरों में उनके द्वारा रास्ते का पता लगायें । जिसने हम को एक प्राण से उत्पन्न किया फिर हमारा एक स्थाई तथा एक समपूर्ण स्थान बनाया । जो आकाश से वर्षा करता है फिर प्रत्येक प्रकार के पौधे उगाता है फिर उससे हरयाली निकालता है जिससे हम गुथे हुये अन्न तथा खजूर के गाभ से लटकते हुये गुच्छे एवं अंगूरों तथा जैतून और अनार के बाग़ निकालते हैं जो समरूप एवं प्रारूप होते हैं, उनके फलों को देखो जब फलें तथा उनका पकान हो ,निः संदेह इसमें उन लोगों के लिये चिन्ह हैं जो विश्वास रखते हैं ।

निःसन्देह रचयिता वही है जिस ने आकाशों एवं धरती को छः दिन में रचा ,फिर अर्श (सिंहासन)पर स्थिर हो गया, जो रत्रि को दिन से ऐसे छुपा देता है कि वह उसे तीव्र गति से आ लेती है,जिसने सूर्य चन्द्रमा तथा सितारे को रचा जो उसके आदेशाधीन हैं । जिस के लिये आकाश तथा धरती की सारी चीजें हैं । रचयिता वही है जो हवायें चलाता है, वे बादलों को उठाती हैं फिर रचयिता अपनी इच्छानुसार उसे

आकाश में फैला देता है तथा उसके टुकडे टुकडे कर देता है, फिर आप देखते हैं किस प्रकार उसके अंदर से बूँदें निकलती हैं, रचयिता वही है जिसे आखें देख नहीं सकतीं और वह सभी निगाहों को देखता है, सूक्ष्मदर्शी सर्वसूचित है,जो आकाशों एवं धरती का अनुपम उत्पत्तिकर्ता है। जिस के न कोई संतान है न कोई पत्नी जो प्रत्येक वस्तु का रचयिता तथा सर्वज्ञ है, जो किसी के आधीन न हो सभी उसके आधीन हों।न उससे कोई वस्तु निकली हो न वह किसी वस्तु से निकला हो। तथा न कोई उसका समकक्ष हो।

यह सब विशेषतायें जिस के अंदर पाई जायें वही रचयिता हो सकता है तथा वही वास्तविक उपास्य हो सकता है उसके अतिरिक्त कोई अन्य उपास्य नहीं हो सकता।

यह जानने के बाद अगर आप मन्नचिन्तन करैं तो आप को ज्ञान हो गा कि यह सब विशेषतायें केवल सर्वशक्तिमान अल्लाह के पाई जाती हैं। किसी और में न यह विशेषतायें है और न ही किसी ने आज तक इन विशेषताओं का दावा किया हैं। जिस से स्पष्ट पता चलता है कि हमारा रचयिता वही अल्लाह है।

रचयिता एवं जन्मदाता एक है

ऊपर लिखी हुई बातों से यह ज्ञान हो गया कि इस संसार तथा इस में जितनी चीजैं है उनका कोई न कोई रचयिता ज़रूर है । प्रन्तु अब यह जानकारी प्राप्त करनी है कि रचयिता एक है या अनेक ?

हम अगर संसार के प्रबन्ध पर ध्यान दें तो हमें स्वयं ज्ञान हो जाये गा कि हमारा तथा इस संसार का रचयिता एक है जो अकेला है,उसके किसी कार्य में कोई भागीदार नहीं,और वह अल्लाह है । क्योंकि जब से हमनें होश संभाला है हम यही देख रहे हैं कि इस संसार की हर चीज अपने अपने समय तथा अपने अपने स्थान पर एक बहुत ही उचित प्रबन्ध से चल रही है । आज तक सूर्य चन्द्र एवं तारों के निकलने एवं डूबने, रात दिन के आने जाने,शरदऋतु, उष्णाऋतु के आने जाने तथा इस प्रकार के दूसरे कार्य में कोई टकाराव नहीं देखा गया, सब के सब अपने अपने समय पर हो रहे हैं, अगर अनेक रचयिता होते तो कोई कहता आज वर्षा हो गी, दूसरा कहता आज धूप रहे गी एवं तीसरा कहता नहीं आज सूर्य नहीं निकले गा,इस प्रकार सब में युद्ध तथा झगडा छिडा रहता । किसी उर्दू कवि ने इसी बात को कितने अनोखे रूप में प्रस्तुत किया है !

अगर दो खुदा होते संसार में	तो दोनों बला होते संसार में
खतरनाक होता ज़माने का रंग	हुवा करती हर रोज़ दोनों में जंग

इधर एक कहता कि मेरी सुनो	उधर एक कहता मियाँ चुप रहो
इधर एक कहता कि भाई मेरे	रहे आज दुनया में बारिश रहे
बिगड कर उधर दूसरा बोलता	नहीं आज है धूप का फैसिला
गरज़ जिस तरह यह उसे रोकता	उसी तरह वह भी उसे टोकता
बिगड कर छड़ी मारता इक खुदा	तो फिर दूसरा उस पे चढ़दौड़ता
खुदा दोनों लडते लडाते यूँही	शबो रोज फितने उठाते यूँही
ज़मी काँपती असमाँ काँपता	लडाई से सारा जहाँ काँपता
तो दुनया के यह बहर व बर खुश्कोतर	बहुत जलद हो जाते ज़ेर व ज़बर
ये तारे ये तारों की झुरमुट में चाँद	बुरी तरह गिर पडत हो हो के माँद
न हम होते बच्चो जहाँ में न तुम	सिरे से जहाँ बल्कि खुद होता गुम

इस संसार में मन्नचिन्तन करने वाला एक बुद्धिमान भी यही कहे गा कि हम सब का रचयिता एक है जो ईश्वरीय गुणों से सुसज्जित है। किसी भी सचिव,परामर्शदाता, नौकर चाकर का निर्धन एवं आश्रित नहीं, बिलकुल अकेला स्वतंत्र तथा स्वच्छन्द है धर्ती यदि आकाश की समस्त वस्तुयें उसी के अधीन हैं। इस लिये कि अगर वह अकेला न होता उसके भागी दार होते याा संसार का प्रबन्ध चालने में वह किसी सचीव,परामर्शदाता, नौकर चाकर का आश्रित होता तो प्रत्येक कार्य आवश्य विलम्ब से होता या संसार चलाने में परस्पर कर बैठते। क्यों कि इस संसार में कोई भी ऐसा घर,कंम्पनी ,फैकटरी. या मानवीय शासन नहीं है जिस के अनेक मालिक या उत्तरदायी हों और कभी भी आपस में मतभेद न हुवा हो,तथा किसी भी पास किये गये सामान के तय्यार कराने में विलम्ब न हो, किन्तु संसार के प्रबन्ध में

आपने कभी किसी भी समय ऐसी कोई चीज़ न देखी होगी। हर काम अपने अपने समय पर हो रहा है। जिस से हर बुद्धिमान यह जान सकता है कि संसार तथा आकाश एवं इस में रहने वाली सारे रचनाओं को चलाने और रचने वाला एक है जो सब पर सर्वशक्तिमान है सब उसके निर्धन हैं वह किसी का आश्रित नहीं प्रन्तु वह कौन है जो यह सब अकेला कर रहा हैं ? तथा इतना बड़ा काम करने में किसी का बिलकुल आश्रित नहीं है ? वह अल्लाह है। वह जो चाहता है जब चाहता है जैसा चाहता है करता है,और वह एक है वह किसी के आधीन नहीं सभी उसके आधीन हैं। न उससे कोई पैदा हुआ तथा न उसे किसी ने पैदा किया एवं न कोई उसका समकक्ष है। वह आसमान में है ,उसको किसे ने नहीं देखा,उसकी ईश्वरीयु संसार की हर वस्तु में है। किन्तु वह किसी के शरीर में प्रवेष नहीं किये हुये है, तथा न ही उसे किसी के रूप में आने की आवश्यकता है। इस कारण कि यदि वह किसी के शरीर में प्रवेष किये होता तो वह उस शरीर का आश्रित होता जबकि वह ऐसा नहीं है। न हीं उसके माता पिता हैं न वह किसी का माता या पिता है। उसको निरन्तरता प्राप्त है तथा वह सदैव रहे गा। धरती पर जो कुछ है सब नाश्वन है, केवल वही अल्लाह जो महान एवं सम्मानित है शेष रह जायेगा ! उसके समान कोई नहीं,सब का स्वामी वही अल्लाह है। जिस ने केवल अपनी उपासना के लिये हम को आपको पैदा किया ! न वह हम से जीविका चाहता है और ना खाना, हम सब को

चहिये कि हम उसी को अपना अल्लाह मान कर उसकी ही उपासना करैं उस के अतिरिक्त किसी अन्य के समक्ष शीश न झुकायें,अनेक देवी देवताओं की उपासना न करैं।

अब इतना कुछ जनाने के बाद यदि हम किसी महान मनुष्य या पशु या किसी और चीज की उपासना करैं या ऐसे लोगों की मूर्ती या तसवीर बनायें और यह मान कर उनकी पूजा करना आरंभ करदें कि जो अल्लाह आकाश में है वही उस में प्रवेष किये है तो यह धोका है,इस लिये कि अल्लाह किसी में प्रवेष नहीं है। और न ही वह अनेक लोगों की उपासना से प्रसन्न होगा। क्यों कि जब एक मनुष्य अपने अधिकार में कोई साझी दारी नहीं कर सकता तो अल्लाह कैसे यह चाहे गा, तथा उसके संबन्ध ऐसा करना कैसे संभव है।

आप स्यवं कुछ समय के लिये विचार करैं कि यह मूर्ती,समाधियाँ या फोटू जिसे आप स्यवं किसी महान मनुष्य के रंग रूप में अपने हाथों द्वारा मिट्टी या कागज से बनाते हैं जिसे अल्लाह ने ही पैदा किया है, क्या उनमें कुछ भी शक्ति है ? यह अन्बोलता गूँगे बहरे,हमारे तथा आपके र्निधन जो बिना आपके बनाये बन नहीं सकते। आप की किसी माँग को पूरा नहीं कर सकते, स्यवं एक स्थान से दूसरे स्थान तक आ जा नहीं सकते,आप की चढ़ाई हुई चीज़ों को अगर कोई उठाना चाहे तो यह रोक नहीं सकते,यदि कोई इनको हानि पहुंचाना चाहे तो अपने आप को बचा नहीं सकते, तो यह

आप को हानि या लाभ कैसे पहुंचा सकते हैं ? फिर देखें आप उनको बनाते हैं तथा कभी कभार आप उनको पानी या मिट्टी में दफन भी कर देते हैं, भला ऐसी मूर्तीयाँ अल्लाह कैसे हो सकती हैं ?

हम हर प्रकार से अपने ह्रिदयं से पूछें तो हम इसी परिणाम तक पहुंचें गे तथा इसी बात से सहमत हों गे कि अल्लाह वह है जो आसमान में है और वह अकेला है उसी पर हमको विश्वास करना चाहिये तथा केवल उसी की उपासना उसके बताये हुये आधारनुसार करना चाहिये उसके अतिरिक्त किसी की उपासना नहीं करनी चाहिये ।

मनुष्य को ईश दौत्य की आवश्यकता

प्रिय मित्रो! इस से पूर्व हम यह जान चुके हैं कि हमारा जन्म क्यों हुवा ? रचयिता का अस्तित्व एवं रचयिताा एक है तथा केवल वही अकेला वास्तविक उपासना के योग्य है,प्रन्तु अब यह जानना भी आवश्यक है कि क्या मनुष्य को ईश दौत्य की आवश्यकता है ?

ईश दौत्य आसमानी धर्मों जैसे यहूदीमत या ईसाई धर्म के लिये अनजानी चीज़ नहीं है ! इस्लाम में तो इस का विशेष स्थान और महत्व है !

हम इस से पहले पढ़ चुके हैं कि रचयिता ने मनुष्य को एक श्रेष्ठ उद्देश्य के लिए उत्पन्न किया है, अर्थात मनुष्य केवल उसी की उपासना करे तथा उस की शिक्षाओं और मार्गदर्शन के आधार पर पवित्र तथा शास्वत जीवन व्यतीत करे ! यह बात कि अल्लाह मनुष्य से क्या चाहता है ? जब तक स्पष्ट और व्यवहारिक ढंग से सामने न आये, वह कैसे अपने पैदा किये जाने के उद्देश्य को पूरा कर सकता है ? यहीं पर मनुष्य को ईश दौत्य की आवश्यकता महसूस होती है ।

ईशदूत के लिए यह अनिवार्य होता है कि वह न्यास पूर्वक अल्लाह की शिक्षाओं को मनुष्य तक पहुंचाये, हमें नहीं मालूम कि हमें क्यों पैदा किया गया है ? मरने के बाद हमारा परिणाम क्या होगा ? क्या मृत्यु के बाद पुनः जीवन है ? क्या हम इस संसार में अपने किये हुये कार्यों का उत्तरदायी है ? क्या हमारे कार्यों का फल या शास्ति भी है ? यह या इस प्रकार की बहुत सी बातैं हम बिना अल्लाह या अल्लाह के संदेष्टा के बताये नहीं जान सकते,तथा यह सब बातैं ऐसे लोगों के माध्यम से मिलना चाहिये जिन पर हमें विश्वाश है । और जिनका हम आदर सम्मान करते हों । यही कारण है कि ईशदूत अल्लाह की ओर से समाज के चुने हुये लोग होते हैं , अपने चरित्र व आचरण की दृष्टि से भी और अपने विवेक और क्षमताओं की दृष्टि से भी ।

निहसंदेह अपने आत्मसुधार एवं अन्तःसुधार तथा अपनी बुद्धि के पथप्रदर्शन के लिए हमें ईशदूत तथा उनकी शिक्षाओं की आवश्यकता है,ताकि हम अपने पैदा किये जाने का उद्देश्य एवं जीवन तथा जीवन रचयिता से अपने सम्बन्ध को जान सकैं। और हम विमुखता न करैं और न ही पथभ्रष्ट हो कर स्वाभाविक आधार के विपरीत चलैं।

इस से यह बात स्पष्ट होती है कि मनुष्य के लिए ईशदूत तथा उनकी शिक्षाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करना,उनकी बताई हुई बातों की पुष्टि करना,जिन कार्यों का उन्हों ने आदेश दिया है उस में उन की आज्ञांपलान करना बहुत ही आवश्यक है। क्यों कि उन के मार्ग दर्शन के बिना इस संसार एवं प्रलोक में सुशीलता प्राप्त करना,सविस्तार अच्छी और बुरी चीजों के बारे में जानकारी,अल्लाह की प्रसन्नता अप्रसन्नता का ज्ञान संभव ही नहीं। क्यों कि अच्छी बातें तथा कार्य एवं अच्छे स्वाभाव तथा व्यवहार हमको उनहीं से मिले हैं, अतः वही कसौटी हैं, उनहीं की बातों एवं व्यावहार पर सारे व्यावहार व कार्यों को तौला जाये गा तथा उनहीं की आज्ञांपालन से पथभ्रष्ट के बीच तया अन्तर किया जाये गा, इस लिये कि उनकी आवश्यकता, शरीर को जान, आँखों को रोशनी, जान को जीवन की आवश्यकता से अधिक है, हर प्रकार की आवश्यकताओं से अधिक मनुष्य को ईश्दूत की आवश्यकता है। क्यों कि मनुष्य के लिए संसार तथा प्रलोक की सुशीलता

उनहीं के बताये हुए मार्ग के अनुसार चलने से मिले गी। ईशदौत्य संसार की जान, रोशनी तथा जीवन है अतःसंसार की भलाई बिना जान, रोशनी, जीवन के कैसे हो सकती है. ईशदौत्य का सूर्य न उगता तो पूरा संसार अंधकारपूर्ण होता, इसी प्रकार जब तक मनुष्य के ह्रिदयं में ईशदौत्य का सूर्य न उगे और उसके जीवन तथा जान में रच बस न जाये वह अन्धकार ही में रहे गा। अतः परिणास्वरूप वह निर्जीव में से होगा,हम सब के रचयिता ने कुर्आन में कहा है : (तथा ऐसा व्यक्ति जो पहले मृत्यु रहा फिर हमने उसे जीवित कर दिया और उसके लिये प्रकाश बना दिया जिस से लोगों में चलता है,क्या उसके समान हो सकता है,जो अंधेरों में हो जिनसे निकल न सकता हो ? ऐसे ही अधर्मियों के लिये जो वे करते हैं सुशोभित बना दिये गये हैं) (सूरह अनआम१२२)

इस मे अल्लाह ने अपने इनकार करने वालों को मृतक तथा अपने ऊपर ईमान लाने वालों को जीवित कहा है ! इसलिये कि अल्लाह पर ईमान न लाने वाला सजातीय के अपमान के अंधकार में भटकता फिरता है तथा उस से निकल ही नहीं पाता जिसका परिणाम मृत्यु तथा विनाश है, और ईमान वाले का दिल अल्लाह पर ईमान से जीवित रहता है, जिस से अपने जीवन मार्ग पर अग्रसर रहता है जिसका परिणाम सफलता तथा सम्मान है।

आप विचार करैं। एक बीमार को दवा के लिये डाक्टर की आवश्यकता होती है,बहुत कम ही लोग अपना

इलाज कर पाते हैं | आप कहीं ऐसे देश की यात्रा कररहे हों जहाँ के मार्ग का ज्ञान न हो, आप उस स्थान का मार्ग जानकार लोंगों से पूछते हैं | आप को किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करनी हो तो अच्छे गुरुओं का पता लगाते हैं | क्यों कि इसकी आप को आवश्यकता है, तो क्या एक मनुष्य जिसको हर चीज़ से पहले धर्मशास्त्र की आवश्यकता है उसको ईशदौत्य की आवश्यकता नहीं है ? क्या हम बिना ईशदूत के अपने रचयिता के आदेश और उसकी उपासना के आधार जान सकते हैं ? क्या कोई अपने रचयिता की प्रसन्नता एव अप्रसन्नता बिना ईशदूत के जान सकता है ? क्या लोक एवं प्रलोक की सुशीलता कोई भी बिना ईशदूत के प्राप्त करसकता है ? आप का उत्तर आवश्य यही हो गा कि नहीं |

इसी लिये मनुष्य को ईशदौत्य की आवश्यकता है | अल्लाह ने अपने ईशदूत के द्वारा मनुष्य को जीवन व्यतीत करने के आधार एवं अपनी प्रसन्नता तथा अप्रसन्नता का मार्ग बताया है,और हर समय में आवश्यकता अनुसार ईशदूत भेजता रहा है, अन्त में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा जो मक्कह अरब देश के प्रसिद्ध नगर में पैदा हुए तथा चालीस वर्ष की आयू में ईशदूत बनाए गये |

समस्त दूत सच्चे तथा सदाचारी थे

अल्लाह ने मनुष्य को सत्य मार्ग दिखाने के लिये बहुत सारे दूत और संदेशटा भेजा उनमे से कुछ का नाम हम जानत हैं और कुछ का नहीं, जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में है :

(तथा हमने प्रत्येक समुयदाय में दूत भेजा कि लोगो ! केवल अल्लाह की उपासना करो तथा राक्षसों(उसके अतिरिक्त सभी मिथ्या पूज्यों) से बचो..) (सूरह नह्ल ३६)

जितने भी दूत संसार में भेजे गये सारे के सारे लोगों में सब से अधिक सच्चे तथा निर्दोष थे । अतः अपने और ईश्वरीय आदेशों से सम्बन्धित कोई चीज़ भूलते नहीं थे सिवाये उन चीजों के जिनको अल्लाह निरस्त कर देता था । अल्लाह ने अपने अन्तिम संदेशटा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस प्रकार पढ़ाने की दायित्व ले ली थी कि वे ओने वाले ईश्वरीय आदेशों को भूलें ही नहीं । उन चीजों के अतिरिक्ते जिनको अल्लाह स्यवं भुलाना चाहे हो । पवित्र कुर्आन में हैः (हम तुझे पढ़ायेंगे फिर तू कदापि न भूले गा) (सूरह आला ६)

अतः इस बात की भी दायित्व लेली थी कि सारा ईश्वरीय आदेश आप के सीने में इकट्ठा कर दे गा ।

(हे नबी आप कुरआन को जल्दी (याद करने) के लिए अपनी जीभ को न हिलायें, उसको एकत्रित करना तथा(आप के मुख) से पढ़ाना हमारा दायित्व है) (सूरह क़ियामः १६.१७)

सारे के सारे दूत अल्लाह का अदेश पहुंचाने में निर्दोष थे तथा अपनी ओर ईश्वरीय आदेशों की कोई भी चीज़ छिपाते न थे, शुभ कुरआन में हैः

(हे दूत ! (सन्देशवाहक) आपकी ओर आपके पोषक के पास से जो(सन्देश) उतारा गया है उसे पहुँचा दें, यदि आप ने यह नहीं किया तो अपने पालनहार का सन्देश नहीं पहुँचाया, और अल्लाह लोगों से आप की रक्षा करे गा, निःसंदेह अल्लाह विश्वासहीनों को मार्गदर्शन नहीं देता) (सूरह माइदह ६७)

यदि अगर कुछ भी उनके ओर से छिपाना या परिवर्तन करना पाया जाता तो अल्लाह उनकी ओर ईश्वरीय आदेश न करता, तथा ऐसा करने वाले को अल्लाह का प्रकोप आ पकड़ता, अतः दूत अपनी ओर से कुछ भी न कहते थे जो कुछ कहते अल्लाह की ओर से ईश्वरीय आदेश होता था दिव्य कुरआन में है

(तथा न वह अपनी इच्छा से कोई बात कहते हैं, वह तो केवल प्रकाशना है जो अवतरित की जाती है) (सूरह नजम ३.४)

जिन दूतों को अल्लाह ने भेजा वह सब सच्चे थे इस लिये कि अल्लाह स्यवं सच्चा है तथा सच्चे द्वारा ही अपने

आदेश फेजा करता है। और सारे दूतों के सच्चे होने की बहुत से दलीलैं हैं हम निम्न में कुछ दलीलों के प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं।

१. आप देखें कि वह अपनी निजी आवश्यकताओं के लिये कोई वस्तु नहीं मांगते, प्रन्तु वह जन साधारण की अच्छाई और भलाई के लिए प्रयत्न करते हैं, और उनको ऐसी वस्तुओं से भय दिलाते हैं जो उनके लिए हानिकारक हैं।

२. वह जिस बात का निमन्त्रण देते और जिन गुप्त वस्तुओं रहस्य लोगों के लिये स्पष्ट करते हैं,उनको कोई मनुष्य अपनी बुद्धि और ज्ञान से नहीं जान सकता,जो बातें वह बताते हैं,घटनाएं और सच्चाई उनकी पुष्टि कर देती हैं।

३. हर दूत को एक मुख्य दलील एवं चमत्कार दी जाती है जिसको लोग न असवीकार कर सकते हैं और न इस जैसी चमत्कार वह उपस्थित ही कर सकते है,इसकी जीवित उदाहरण दूत नूह हैं , उन्हों ने अपनी जाति को ललकारा कि उनको समाप्त कर दें परन्तु वह लोग ऐसा न करसके जबकि नूह उनके बीच बिना रक्षक के रहते थे, इसी प्रकार दूत इब्राहीम, हूद के उदाहरण हैं मूसा को अल्लाह ने एक छड़ी दी थी जब वह चाहते अल्लाह के आदेश से उनके हाथ में वह अजगर बन जाती, तथा ईसा जन्म से ही अल्लाह के आदेश से अन्धे एवं कोढ़ी को स्वस्थ करदेते तथा जीवित कर देते और हमारे आदरणीय ईश्दूत

मुहम्मद स॰अ॰व॰यह कुरआन ले कर आए जबकि आप न पढ़ सकते थे और न लिख सकते थे तथा न इससे पहले किसी व्यक्ति से आपने कुछ सीखा था, दिव्य कुर्आन ने अरबों के समक्ष ऐसे महान स्तर का साहित्य प्रस्तुत किया कि सारे आश्चर्य रह गये सारे अरब निवासी मिलकर भी कुर्आन की सूरत जैसी एक सूरत (अध्याय) या एक गथन भी प्रस्तुत न कर सके ।

४. समस्त दूतों की व्यवहार पर ध्यान देना एवं उन पर विचार करना !

आप अगर किसी का व्यवहार जानना चाहते हैं तो उसके संग उठें बैठें ताकि उसकी हर चाल जान सकें,सारे दूत अपनी समुदाय के साथ उठते बेठते तथा जीवन बिताते थे जिस से लोग उन आचरण को भली भांति जानते थे इसी कारण लोग आपको सच्चा तथा ग्रहीता कहते थे ।

५. दूतादेशों पर ध्यान देना ।

दूत के निमन्तत्रण पर ध्यान देने से उनकी सच्चाई का पता चलता है,क्यों कि सारे दूत मनुष्य तथा जन समाज की सुधार के लिए संपूर्ण रीति और संपूण धर्म ले कर आये थे,जिसमें न कोई टकराव है और न कौई कमी बल्कि मनुष्य के स्वभाव के अनुसार है ।

६. अल्लाह का अपने सारे दूतों की सहयता एवं समर्थन ।

समस्त दूतों की सच्चाई पर एक प्रमाण यह भी है कि अल्लाह ने उनका समर्थन किया है और उनकी रक्षा की है । अतः यह हो नहीं सकता कि कोई अल्लाह पर झूट बोलकर दावा करे कि में अल्लाह का दूत हूँ तथा अल्लाह उसकी समर्थन करे आप ध्यान दें यदि संसार में कोई झूटमूट यह कहे कि में फलाँ राजा का संदेशटा हूं और उस राजा को पता चल जाये कि फलाँ ने इस प्रकार का झूट रचा है तथा वह उसको पकड़ने में सफल हो जाये,तो उसको किस प्रकार की कड़ी सजा एवं कठोर दण्ड़ देगा आप स्वयं समझ सकते हैं । तो यह कैसे होसकता है कि संसार का रचयिता, पालनहार,पूर्ण ज्ञान एवं तत्वदर्शी यह जाने और सुने कि फलाँ मनुष्य ने उस पर झूट बाँधा और दूत होने का दावा किया है फिर भी अल्लाह उसे छूट दे और उसको कोई दण्ड़ न दे ? यदि ऐसा हो भी जाये जब कि ऐसा होना संभव नहीं तो अधिक दिन उसका झूट छिप नहीं सकता,बहुत से लोगों ने दूत होने का झूटा दावा किया और अल्लाह ने उनका भेद संसार वालो के समक्ष खोल दिया । तथा उनके झूट का पर्दा फाश होगया ।

इन सारी बातों से यह ज्ञान हुवा कि सारे दूत सच्चे थे । और सच्चे दूतों की सच्ची निमन्त्रण पर सच्चे लोग अवश्य विश्वास करते हैं ।

समस्त दूतों का धर्म एक या अनेक ?
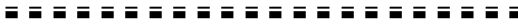
अल्लाह ने मनुष्य को अपना सत्य मार्ग बताने के लिए बहुत से दूत भेजा सब से पहले आदम अलै हिस्सलाम को भेजा जो संसार में मानवजाति की आधारशिला हैं | और सब से अन्त में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा,जो महा संदेश लेकर सारे ईश दूत आए वह वज्ञान ज्ञाता तथा विवेक अल्लाह की ओर ही से उतारा गया है, इसी कारण सब एक ही मार्ग की पथप्रदर्शन करते हैं जो अगले और पिछले तमाम समुदायो के लिए समान है | इसी प्रकार सारे ईश दूतों की निमंत्रण पर ध्यान देने से इस बात का निश्चय ज्ञान होता है कि सारे दूतों का मूल संदेश यही था कि केवल एक अल्लाह की पूजा करो तथा मिथ्या पूज्यों से बचो! अल्लाह ही की आराधना करो उसके साथ किसी को साझी न बनाओ,इसी बात की निमंत्रण सारे दूतों ने दी | हज़रत आदम से लेकर नूह, इब्राहीम, हूद, सालेह, ईसा, मूसा सारे के सारे दूतों ने अपनी अपनी समुदाय से यही कहा ! कि हे मेरे वर्ग के वासियो ! अल्लाह की आराधना करो उसके अतिरिक्त कोई तुम्हारा वास्तविक उपास्य नहीं है |

एकेश्वरका प्रमाण इन्जील में : इस बात का अकाटयप्रमाण सारे धार्मिक ग्रन्थो एवं पुस्तकों मे है | इस के कुछ उदाहरण विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों में प्रस्तुत निम्न में दिये जा रहे हैं |

बाईबल **Deuteronomy 6:4** में है

(Hear, O Israel : The Lord our God is one Lord)

(ऐ इसराईल सुनोः प्रतिपालक (रब) हमरा उपास्य एवं माबूद एक प्रतिपालक (रब) है।

Has not the one God made and sustained for us the spirit of life, Malachi 2:15

Malachi 2:15 में है : (क्या अकेले अल्लाह ने हमारे लिए जीवन नहीं पैदा किया और हमें जीविका नहीं देता है ?

You may know and believe Me and understand that I am He. Before Me no god was formed, nor shall there be ANy after Me. I am the Lord , and besides Me there is no Savior . Isaiah 43:10-11)

Isaiah 43:10-11 में है : (तुम लोग जान लो तथा मुझ पर विश्वास करो, और अनुभूति करलो कि में ही अल्लाह हूँ, मुझ से पहले कोई उपास्य नहीं पाया जाता, और न ही मेरे बाद कोई उपास्य होगा, में ही प्रतिपालक हूँ और मेरे अतिरिक्त कोई बचाने वाला नहीं है।

I am the first and I am the last; besides Me there is no god. Who is ; like Me? (Isaiah 44: 6)

Isaiah 44: 6 में हैः में ही आदि तथा अन्त हूँ और मेरे अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं है, मेरे प्रकार कौन है ?

Now this is life eternal, that they know you, the only true God, and jesus Christ, whom you have sent. (John 17:3)

ईन्जील यूहन्ना 17: 3 में है : (सदा जीवन यही है कि लोग तुझ को पहचान लें कि तू ही सचमुच सत्य उपास्य है, तू अकेला है और यसू मसीह वह हैं जिनको तुने भेजा है |

Worship the Lord your God, and serve Him only, Matthew4:10–

इन्जील मत्ता 4:10 में है : (तुम सारे के सारे अपने उपास्य अल्लाह की उपासना करो, तथा केवल उसी की सेवा करो ।

One came abd said unto him, Good Master, what good thing shall I do, that I may have eternal life? And he(jesus) said unto him, Why callest thou me good ? There is none good but one, that is , God. (Matthew 19:16 - 17)

इनजील मत्ता 19:16 - 17 में एक दूेसरे स्थान में हैः (उनके पास एक आया और उस से कहा, मेरे ईश्वर! वह कौन सी सर्वोच्य कार्य है जिसे मैं करूँ ताकि मैं स्थायित्व की जीवन पा लूँ ? तो उसको (यसू मसीह) ने उत्तर दिया मुझे ईश्वर क्यों कहते हो ? ईश्वर केवल एक है और वह अल्लाह है ।

एकेश्वरवाद का प्रमाण हिन्दू धार्मिक ग्रन्थ वेदों से

इसी प्रकार ऋग्वेद के कई श्लोकों में केवल एक ईश्वर ही की पूजा पर बल दिया गया है!हम निम्न में कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

(हे मनुष्यों ! तुम को अत्यंत उचित है कि मुझको छोड़कर उपासना करने योग्य किसी दूसरे देव को कभी मत मानों,क्यों कि एक मुझ को छोड़कर दूसरा ईश्वर नहीं है :) ऋग्वेद मंडल-१ सूक्त.८ ऋचा १०,

(जो परमेश्वर के अतिरिक्त दूसरे का पूजन करने वाला पुरुष है, वह कभी उत्तम फल को प्राप्त होने योग्य नहीं हो सकता, क्यों कि न तो ईश्वर की ऐसी आज्ञा ही है और न ईश्वर के समान कोई दूसरा पदार्थ है, जिसका उसके स्थान पर पूजा किया जाये । (ऋग्वेद मंडल -१ सूक्त.१०मंत्र. -१)

(जब कोई पूछे कि ईश्वर कितना बड़ा है, तो उत्तर यह है कि जिसको सब आकाश आदि बड़े बड़े पदार्थ भी घेरे में नहीं ला सकते,क्योंकि वह अन्त है । क्यों कि जब परमेश्वर के गुण और कर्मो की गणना कौई नहीं करसकता,तो कोई उसके अन्त पाने में समर्थ कैसे हो सकता है.) ऋग्वेद मंडल-१ सूक्त.१०ऋचा १,

(जिस दयालू ईश्वर ने प्राणियों के सुख के लिए जगत में अनेक उत्तम पदार्थ अपनी परीक्रमा से उत्पन्न करके जीवन को दिये हैं, उसी ईश्वर की स्तुति करनी चाहिये |)ऋग्वेद मंडल-१ सूक्त.१२ ऋचा ८,

(जो ईश्वर इन पदार्थो को उत्पन्न नहीं करता,तो कोई पुरूष उपकार लेने को समर्थ नहीं हो सकता,और जब मनुष्य निद्रा में ग्रस्त होता है , तब कोई मनुष्य किसी भोग करने योग्य पदार्थ को प्राप्त नहीं करता एव जिस ईश्वर ने सब मनुष्य आदि प्राणियों के शरीर आदि पदार्थ उत्पन्न किया वही अतिशय और एक मात्र उपासना करने योग्य है | वही इस जगत को सुखयुक्त रखता है |) ऋग्वेद मंडल -१ सूक्त.१४ऋचा९-११,

कुर्आन में भी पथ भ्रष्ट जन समुदाय को एक ईश्वर वाद की ओर बुलाया गया है तथा मनुष्य को नाना प्रकार की गुलाकी से मुक्त करा कर केवल एक ईश्वर का भक्त बनने को कहा गया है |

शुभ कुर्आन में है | (अल्लाह की पूजा करो तथा पुजितो से बचो) सूरह नहल ३६

(और तुम(नराशंस)से पूर्व हम (अल्लाह) ने जो भी दूत भेजे उसे आदेश करते रहे कि मेरे अतिरिक्त कोई पुज्य नहीं. अतः मात्र मेरी पूजा करते रहो) (सूरह अंबिया आ॰२५)

इसके अतिरिक्त और बहु से उदाहरण हैं जो कि प्रायमिक पुस्तकों में मौजूद हैं, जिन से यह मालूम होता है कि समस्त दूतों ने अपने अपने जन समुदाय को मात्र अल्लाह की उपासना करने का आदेश दिया तथा मनुष्य को नाना प्रकार की गुलाकी से मुक्त कराया, उन की निमन्त्रण का केन्द्र बिन्दु भी मालूम हुवा कि सारे दूतों का धर्म एक ही था वह यह कि इस गवाही की माँग थी! यह एलान था ! और इस सच्चाई का परचार था कि अल्लाह ही सच्चा पूजनीय है। उसके अतिरिक्त सभी पूजे जाने वाले असत्य हैं, जो किसी को लाभ या क्षति पहुँचाने की शक्ति नहीं रखते और न इस योग्य हैं कि उनकी पूजा की जाये। इसी प्रकार वह महान आदेशक है जो सृष्टि और जीवन के सारे साधनों को संचालान करने वाला है। इसी कारण लोग कोई निर्णय उसके नियम और आदेश के विरुद्ध न करें इसी लिए आवश्यक है कि लोग सारे दूतों को मान कर उनके संदेशों पर विशवास करते हुये उनका पालन करैं और उनकी शिक्षा को अपनायें और एक अल्लाह की उपासना करैं। तथा प्रत्येक प्रकार की पूजा बस अल्लाह के लिये हो। इसी प्रकार अपा स्यवं बतायें कि क्या किसी के लिये यह उचित है कि सारे दूतों के मार्ग को छोड़ कर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के समक्ष अपनीं पीठ या शीश झुकाये या उसके अतिरिक्त किसी से प्रार्थना करे या किसी प्राणी से ऐसी वस्तु मांगे जिस पर अल्लाह के सिवाय कोई और शक्ति नहीं रखता? आप यही कहैंगे कि ऐसा करना मूर्खता है। तो अब आप को

ज्ञान हो गया कि सारे दूतों ने केवल एक अल्लाह की उपासना का निमन्तरण दिया है तथा यही महान सत्य है ।

प्राथमिक पवित्र पुस्तकों में परिवर्तन

अल्लाह ने समस्त मनुष्यों को अपना सत्य मार्ग बताने के लिए जिस प्रकार ईशदूत हर समुदाय मे भेजा उसी प्रकार उन पर पुस्तकैं भी उतारीं ताकि लोग उसके आधार को जान कर अपनी जीवन बितायें । उन में जिन पुस्तकों का नाम हमें मालूम हैं वह निम्नलिखित हैं ।

(१) तौरात-ः जो हज़रत मूसा(अ.स.)पर उतारी गई ।

(२) इंजील-ः जो हज़रत ईसा (अ.स.) पर उतारी गई ।

(३) ज़बूर-ःजो हज़रत दाऊद (अ.स.) पर उतारी गई ।

(४) कुरआन-ः जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारी गई और आज भी हमरे हाथों मैं अपनी वास्तविक रूप में मौजूद है ।

(५) सुहुफेइब्राहीम-ः जो हज़रत इब्राहीम (अ .स.) पर उतारी गई है ।

इन पुस्तकौं पर इस प्रकार विश्वा रखना कि वह अल्लाह की ओर से हैं आवश्यक है । प्रन्तु यहाँ यह प्रश्न उठता है कि क्या हर उस पुस्तक पर ईमान लाना आवश्यक है जो आज लोगों के हाथों में है ? क्या यह वही पवित्र

पुस्तकैं है जो उन ईशदूतों पर उतारी गई थीं ? यह एक संक्षिप्त प्रश्न है और इसका उत्तर यह है कि वह सब पुस्तकैं जो कुरआन से पूर्व आ चुकी हैं और उनका जो नमूना आज लोंगों के हाथों में है वास्तव में वह नहीं हैं जो ईश दूतों पर उतारी गयी थीं. कुरआन के अतिरिक्त समस्त आसमानी पुस्तकों में लोगों ने अपनी ओर से परिवर्तन कर दिया तथा अपनी ईच्छानुसार उन में इस प्रकार घटाव एवं बढ़ाव किया कि वह अपनी वास्तविक रूप में बाकी न रहीं ।

पवित्र ग्रन्थों में परिवर्तन का कारण

१. इन पुस्तकों के सच्चे बोध मौजूद नहीं हैं और जो मौजूद भी हैं वह उनके अनुवाद हैं, इन अनुवादों में अनुवाद करते समय अनुवादक के विचार, उस की व्याख्यायें और मूल पुस्तक की बातें गड़मड़ होकर रह गईं है उनमें मूल शब्द तथा व्याख्या में अन्तर नहीं रह गया ।

२. मूल पुस्तक उस दूत के युग में लिखी नहीं गई बल्कि शताब्दियों बाद उन बोधों में लिखी गई है जिसको उस दूत के मानने वालों ने प्रतिलिपि किया था जैसा कि इंजील का हाल है अथवा फिर उसका मूल बोध नष्ट हो गया । पुनः उस बोध से लिखा गया है जिसको उस दूत के मानने वालों ने लिखा था जैसा तौरेत के साथ हुआ ।

३. यह सब किताबें साधारण मनुष्यों के लिए नहीं थीं बल्कि हर पुस्तक मुख्य समुदाय के लिए थी क्यों कि दूतों के आने की क्रिया उसके बाद भी समाप्त नहीं हुई बल्कि हर एक दूत अपने बाद आने वाले दूत की सूचना देता रहा।

४. वह भाषायें जिन में वह पुस्तकें उतारी गयी थी उनमें या तो परिवर्तन आ गया,या वह बिलकुल ही समापत हो गईं आज उनको कोई जान नहीं सकता। यदि कोई लिखित वस्तु उन भाषाओं में पाई जाये तो उससे यह प्रमाण लेना सही नहीं होगा कि यही मूल पुस्तक है, बल्कि उस में तो जो कुछ है उसे सही से समझा भी नहीं जा सकता।

प्रन्तु कुरआन तो वह अपनी वास्तविक रूप में उसी प्रकार शेष है जैसा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम पर उतारा गया। कुरआन के अतिरिक्त सारी अवतारित पुस्तकों को पढ़ ने वाला इस बात को जानता है लेकिन आज तक कोई ऐसा नहीं पैदा हुआ जो यह कह सके कि कुरआन मे किसी भी स्थान में कुछ भी परिवर्तन हुआ हो वह आरंभ से आज तक जैसा अवतारित हुवा वैसा ही वास्तविक रूप में मौजूद है और अन्त तक वैसा ही रहे गा। ऐसा निम्नलिखित कारणों के आधार पर है :---

१.अल्लाह ने उसकी रक्षा का स्वयं उत्तरदायित्व लिया है जैसा कि स्यवं कुरआन में है।

(निस्संदेह हमने ही कुरआन को उतारा है और हम ही उसकी रक्षा करने वाले है |) (सूरह हिज्र ९,,)

२. यह पुस्तक नबी के युग में ही लिख दी गई थी जब भी कोई पद(आयत) व सूरत (अध्याय)अवतारित हुई तुरंन्त रसूल लेखक को आदेश देते कि कुरआन के उस स्थान में जहाँ अब वह है उसे लिख दें | इसी प्रकार हृज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के साथियों ने इसे याद कठस्त भी किया,उतरने का कारण और उनके स्थानों को भी याद किया, इस के लिये विशेष किताबों का संकलन हुआ |

३. हृज़रत जिबरील हर वर्ष अन्तिम ईशदूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम को कुरआन सुनाते | और जिस वर्ष आप (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम) की मृत्यु हुई दो बार सुनाया |

४. कुरआन को नबी सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के युग में और आप के बाद भी लोगों के सीनों में सुरक्षित कर दिया गया | अब कौई मनुष्य उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं कर सकता | यदि लिखने में कोई परिवर्तन कर भी दिया गया होता तो उसको कंठस्त करने वाले उसे तुरन्त पकड़ते तथा उस चूक या परिवर्तन से जनसमूह को अवगत कराते तथा उस चूक को निकालते,किन्तु गतवर्षों में ऐसा कदापि नहीं हुआ |

५. जिस भाषा में क़ुरआन अवतारित हुआ वह अब तक शेष तथा जीवित है। उसमें अब तक कोई परिवर्तन नहीं आया। हर वह मनुष्य जो इस भाषा को अच्छे भली भाँति जानता हो वह कुरआन पढ़े तो उसकी मांग और उन लक्ष्यों को जान सकता है जो उसके शब्दों द्वारा समझ में आता है। इसी प्रकार कुरआन के सुरक्षित रहने कर अनेक कारण हैं जिन्हें आप बहुत सी पुस्तकों मे पढ़ सकते है।

अन्तिम ईश्दूत

अल्लाह ने जन समुदाय तक तथ्यों पर आधारित प्रकाशन पहुँचाने तथा सत्यमार्ग पर चलाने की प्ररणाम देने और उनके लिए पथ प्रदर्शक की भूमिका अदा करने केलिए अंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम को भेजा।

यह भी बात स्पष्ट है कि विश्व के सभी धर्मों में ईशदूतों के नाम मिलते हैं। इसी प्रकार यह मानव धर्म का अति विचित्र ऐतिहासिक तथ्य है कि सभी प्राचीन धर्म की शास्त्रों और ईशदूतों ने यह कहा है कि धर्म की पूर्ति के लिए एक अन्य की प्रतिक्षा करें।

ईशदूतों के आने का कारण यह है कि :--

📖 जब मानव समाज धर्म की वास्तविक्ता से दूर हो जाता है।

📖 जब मूल धर्म में अपने स्वार्थ के लिए धर्मभास को मिला लिया जाता है ।

📖 जब धर्म के नाम पर अधर्म किया जाता है ।

📖 जब धर्म के स्वरूप अधिक लोग धर्म के रूप में अधर्म का उपदेश देने लगते है।

📖 जब घोर हिंसा और पाप बढ़ जाते है तो ईशवर के दूत धर्म की स्थापना और ईश्वरीय धर्म को उनका मूल रूप प्रदान करने के लिए आते हैं।

यह बात सभी धर्मों में आई है और हर धर्म में अनेक ईश दूतों के नाम इसका प्रमाण हैं ।

सभी प्राचीन धर्म शास्त्रों मे एक अन्तिम ईश दूत के आने की चर्चा यह भी स्पष्ट करता है कि अन्तिम ईश दूत जिस युग में आयेगा उस युग से पूर्व का कोई धर्म यह दावा नहीं कर सकता कि वह मूलस्वरूप सुरक्षित है और इस के धर्म शास्त्र में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। ऐसा दावा करना यह अस्वीकार करना होगा कि ईशदूत धर्म की स्थापना के लिये उस समय आते हैं जब धर्म की ग्लानी होती है और उस अन्तिम ईश दूत को नकार देना स्यवं अपने धर्म शास्त्रों को नकारना होगा ।

ततःपश्चात अब देखें कि अन्तिम ईशदूत के विषय में आदि धर्म शास्त्र में क्या है ?

अन्तिम अवतार वेद और पुराणों में : डा. वेद प्रकाश उपाध्याय अपनी शोध पुस्तक(कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब) में लिखते हैं कि :--

(पुराणों में उस अन्तिम ईशदूत का काल निर्णय और उनके बिशेष गुणों की चर्चा इस प्रकार की गई है एवं उन्हें कल्कि अवतार के नाम से याद किया गया है।)

१. भागवत पराण १२ .२.१ में कहा गया है कि वह कलियुग में आयेंगे |

इत्थ कलों गतू प्राय जने शुखर धर्मिणि

धर्म त्रणय सत्वेन भगवान वतरिष्यति

अर्थात कलियुग के कुछ या प्रयः बीत जाने पर आयेंगे |

२. भागवत पुराण १२ स्कन्ध अध्याय २ श्लोक १८ में कहा गया है कि :--

शाम्भल ग्राम मुखस्य ब्राहमणस्य हमात्मानः

भवने निष्णु यशासः कल्किः प्रदुभीविष्यति

अर्थात : शम्भल ग्राम के प्रमुख पूरोहित के भवन में निष्णु यश के हाँ कल्कि पैदा होंगे |

३. ऐसे ही कल्कि पुराण अध्याय २,श्लोक ४ में कहा गया है कि :--

शम्भल विष्णु यशासो गृहे प्रदुर्भवाम्यहमू

अर्थात वह विष्णु यश के घर शम्भलग्राम में पैदा होंग ।

४. इसी प्रकार कल्कि पुराण अध्याय २ श्लोक ११ में कहा गया है कि :--

सुमत्यां विष्ण यशसा गर्भमाधत्त वैष्णवम

अर्थात विष्णु यश की पत्नी समुत्या के गर्भ से पैदा होंगे ।

अब अईये श्लोकों के कुछ शब्दों की संक्षिप्त व्याखया देखें :--

(शामभल ग्राम)में शामभल शम धातु से बना है । जिसका अर्थ शान्त है और ग्राम का अर्थ स्थान एवं नगर है ।

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि(मक्का)का एक नाम(बलदे अमीन)और(बलदे आमीन)अया है । जिसका अर्थ है शान्त का नगर(देखिये,पवित्रकुरआनसू.१४,आयत३४, सू॰८४,आयत३, सू॰२,१२६)

विष्णु - यश= विष्णु ईश्वर का एक नाम है और यश का अर्थ है (दास)

अरबी भाषा में ईश्वर का नाम (अल्लाह) है और दास का अर्थ (अबद) है ।

अर्थात (अब्दुल्लाह)और यही अन्तिम महा ईशदूत नराशंस (मुहम्मद) के पिता का नाम है ।

सुमत्य=सु+मति, सु=,सुन्दर, मति =स्वाभाव

अतः सुमति= जिसका स्वभाव सुन्दर एव शान्त हो ।

नराशंस की माँ का नाम..आमिना..था जिस का शब्दार्थ भी यही है।

कल्कि पुराण स्कन्ध १२ , अध्याय २,श्लोक , १२ में कहा गया है कि कल्कि अवतार के अंग से सुगन्ध निकले गी ।

अथते षाँ भविष्ययन्ति मनासी विशदानी वै ।

वसदेव अंगराति पुर्ण गन्ध निलस्पृ शाम ।

अर्थात : अन्तिम अवतार के शरीर से सुगन्ध निकले गी जो हवा के साथ मिलकर लोगों के मन को निर्मल करेगी ।

व्याख्या : इतिहास से यह स्पष्ट है कि अन्तिम अवतार मुहम्मद(उन पर अल्लाह की दाया तथा शान्त हो) में यह विशेष गुण थे । कि अप जिस मार्ग से जाते थे उस पर आप के पश्चात कोई जाता था तो मार्ग की सुगन्ध से पहचान लेता था कि आप इस रास्ते से गये हैं । आपके

अतिरिक्त अब तक किसी अवतार या ईशदूत के संबन्ध में इस विशेष गुण की कोई चर्चा इतिहास मे नहीं मिलती। हमने यहाँ कुछ श्लोक के उदाहरणास्वरूप प्रस्तुत किये है इसके अतिरिक्त ऐसे श्लोक हैं जिन में अन्तिम दूत के शुभ चिन्ह पाये जाते हैं।

वेदों में जिस में अन्तिम ईशदूत की गुणों की चर्चा सविस्तार की गई है किन्तु हम उदाहरणस्वरुप कुछ श्लोक प्रस्तुत करते हैं।

वेदों में अन्तिम ईशदूत का नाम ..नराशंस..अहमिद्धि..मामद इत्यादि आया है।

नराशंस के लिये देखिये अथर्वेद कानड २०,सू॰१२७, मंत्र१ एवं मंडल२ सू॰३ मंत्र १२,का॰१,सू॰१८,मंत्र ७ एव४/४/२, इत्यादि।

नराशंसः यह दो शब्दो के योग से मिलकर बना है। नर एवं आशंस नर=पुरुष, आशंस=प्रशंसित

अतः नराशंस का अर्थ है ऐसा पुरुष जिस की खूब प्रशंसा की गई हो।

अथर्वेद कानड २०,सू॰१२७मंत्र१, में कहा गया है कि :

इदं जना श्रुत नराशंस स्तविश्यति

अर्थात : यह शुभ समाचार आदर से सुनो की नराशंस की स्तुति की जाये गी।

अरबी भाषा में ..मुहम्मद.. हम्द धातु से बना है जिसका अर्थ है प्रशंसा करना, स्तुति करना,अतः इसका अर्थ भी वही है जो नराशंस का है देखिये पुस्तक (सत्य धर्म एक या अनेक)

ऋग्वेद मं॰ १,सू॰१८,मं॰१, में कहा गया है :---

नराशंसमू सुधृष्टममू अपश्यं सप्रथस्तममू

अर्थात नराशंस सबके पथ प्रदर्शक होंगे,सब को समान रूप से देखेंगे और आकाशीय प्रकाश समान हों गे।

ऋग्वेद मं॰ १,सू॰१६३,मं॰१, में अन्तिम ईशदूत को (समुद्रादूत अरबनू) कहा गया है जिसका अर्थ है मुद्रा(मोहर) सहित अरब देश में आने वाली दूत।

इस वेद मंत्र मे अन्तिम ईशदूत के दो चिन्ह बताये गये हैं :--

१. वह मुद्रित होंगे।

२. अरब देश में पैदा होंगे।

हमें धार्मिक इतिहास में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त मुद्रित ईशदूत कोई अन्य नहीं

मिलता,, इस विषय में अधिक जानकारी के लिये देखें पुस्तक(महा ईशदूत की खोज ,लेखकः अज़ीज़ुल हक़ उमरी एम.ए)

आईये बाईबल आदि प्रचीन धर्म ग्रान्थों का भी अध्ययन करलें कि यह ग्रंथ महा ईशदूत के विषय में क्या कहते है,पवित्र कुराअन में है :

(उस समय को याद करो जब मर्यमू के पुत्र ईसा ने कहा कि हे इस्राईल के पुत्रो! में तुम्हारी ओर ईश्वर की ओर से दूत बनाकर भेजा गया हूँ और अपने पूर्व धर्मशास्त्र तौरात की, पुष्टि करने और एक ईशदूत की सुशुभ सूचना देने आया हूँ जो मेरे बाद आयेगा जिसका नाम अहमद होगा।) (कुरआन,सूरह सफ़्फ़ आयत ६)

इन्जील युहन्ना १४.१५.१६,में हैः ईसा ने कहा कि यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो तो मेरी बातें याद रखो और में पिता से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हैं एक अन्य फारक़लीत प्रदान करे ताकि तुम्हारे साथ सदा रहे।

फारक़लीत (Paraclet) का अनुवाद अरबी भाषा में..अहमद..और मुहम्मद है जैसा कि पवित्र कुरआन ने ईसा की भविश्यवाणी में स्पष्ट रूप से अहमद कहा है। मूल इबरानी भाषा में यह भविष्यवाणी इस प्रकार है।

(हिक्कोममित्तदिम बिकुल्लो महामदेम जेहूददी बेजेम राईबनूटे यापुस हलम) (श्रेष्ठ ५.१६)

अनुवाद : उसका मुखड़ा मधुर है, हाँ वह महामद है, वही मेरा प्रियतम है और वही मेरा मित्र है यरूशलम की पुत्रियो !

इस में महा ईशदूत का नाम स्पष्ट रूप से महामद आया है ।
यस्ययाह की भविष्यवाणी(यस्ययाह२:१७-१८)में इस प्रकार है। (इन दिनों मात्र ईश्वर ही सबसे ऊँचा रहेगा और सभी मुर्तियाँ नष्ट कर दी जायेंगी,,)

यस्ययाह का एक वचन(पुस्तक यस्ययाह अध्याय २९.६,7) में यह है कि गधे पर सवार सेना अर्थात ईसा के पश्चात ऊँटों पर सवार सेना आयेगी और दूसरा वचन इसी पुस्तक के अध्याय ४२.वाक्य ७ से २५ तक इस प्रकार है कि, (अब भविष्य के लिये भष्यिवाणी करता हूँ कि ईश्वर का एक योद्धा ईशदूत के रूप में आगे बढ़े गा और वह "कैदा,,(इस्माइल के पुत्रों) मेंसे हो गा)

यहां यह स्पष्ट है कि इसमाईल के वंश में केवल एक ही महा ईशदूत मुहम्मद आये हैं ।

इन संक्षिप्त चर्चा के बाद सभी धर्मों के अनुयाईयों और सनातन धर्मियों से यह प्रश्न है कि प्रस्तुत मंत्र वह सत्य हैं कि नहीं इस पर विचार करना प्रत्येक मानव का कर्तव्य है ।

हम यहां केवल डा॰ वेद प्रकाश उपाध्याय का विचार लिखते हैं जोा उनकी पुस्तक (कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब पृष्ठ ५७ में है)|

(मुहम्मद साहब द्वारा प्रदर्शित सनातन धर्म तथा उनके उनुयाईयों को देखकर यह लगता है कि यह तो वैदिक धर्म का उलटा ही धर्म है परन्तु चौबिस अवतरों के प्रकरण में भगवत पुराण में जब मैं ने कल्कि को देखा तथा द्वादशः स्कंध में उनके होने वाले वृत्तान्त को पढ़ा तब मुहम्मद साहब से पूर्ण समानता मिली , और मुझे विश्वास हो गया कि यही हैं कल्कि , और उनके धर्म की बाढ़ तथा अनुयाईयों की वृद्धि से अपना वैदिक धर्म ही पुष्ट होता है, अभी न सही जब इस बात का सबको ज्ञान हो जायेगा,तब मुसलमानों का इस्लाम धर्म तथा आस्तिकों का ईश्वर आज्ञा पालन धर्म भारत में प्रचलित, वैष्णव, शैव, शाक्त, जैन तथा बौद्ध धर्म की भाँति सभी लोगों द्वारा स्वीकार होगा तथा भारतीयों और मुसलमानों का वर्ग मिलकर एक बहुत बड़ा समाज बनेगा | लाठी, डंडों की चोट से धर्म नहीं फैलता अपितु लोगों को जब ईश्वर की कृपा से धर्म के सत्य अवारूप का ज्ञान हो जाता है तो वह स्यवं श्रेष्ठ धर्म का आचरण करने लगते हैं) |

देखें पुस्तक(महा ईशदूत की खोज) लेखकः अज़ीज़ुल हक़ उमरी . एम .ए)

इन सारी बातों से स्पष्ट ज्ञान हुआ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के आने की भविष्यवाणी सारे दूतों ने की और सभी पुस्तकों में यह बात मौजूद है,जैसा कि में ने ऊपर कुछ उदाहरण प्रस्तुत यिा है ।

यहाँ प्रश्न यह उठता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निमंत्रण क्या था ? इसका उत्तर यह है की आपने भी अपनी समुदाय को वही निमंत्रण दिया जो सारे दूतों ने दिया । आपका मूल संदेश यही था : अल्लाह ही की उपासना करो उस के अतिरिक्त कोई अन्य तुम्हारा उपास्य नहीं है,और न ही अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्नीय है । वह अकेला है,उसके पालनहार होने में, उसके पूज्नीय होने में,उसके नामों तथा गुणों में, उसका कोई भागीदार नहीं । उसके और उसके प्राणियों के बीच कोई माध्यम व अभिप्राय नहीं है । वही है जिसके हाथ में उनका आहार एवं जीविका है । जो उनके लाभ ,हानि, जीवन, तथा मृत्य का अधिकार रखता है । वह उनकी प्रार्थना को सयनताक्ष है तथा संकट में मनुष्य की प्रार्थना को जब वह पुकारता है तो वह स्वीकार करता है । सब प्राणी उसी पर निर्भर हैं और वह किसी पर निर्भर नहीं है वही अल्लाह सदा जीवित रहने वाला,धरती तथा आकाश को पकड़ने वाला, जानने वाला और शक्ति वाला है ।

वह धर्म जिसे लेकर मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम आए उसका नाम इस्लाम है जो उनकी ओर से नहीं

बल्कि अल्लाह की ओर से है। यहाँ यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि इस्लाम का शाब्दिक अर्थ क्या है ?

इस्लाम धर्म का नाम किसी व्यक्ति विशेष के नाम पर नहीं रखा गया है, जिस प्रकार कि क्रिश्चयन धर्म का नाम जीसस क्राइस्ट के नाम पर रखा गया, बौद्ध धर्म गौतम बुद्ध के नाम पर, कन्फयूशयस धर्म कन्फयूशन के नाम पर और मार्किसज़्म कार्ल मार्क्स के नाम पर। इस्लाम का नाम न तो किसी जाति के नाम पर रखा गया जैसा कि यहूदियत का नाम यहूदाह के क़बीले के नाम पर रखा गया और हिन्दुत्व का नाम हिन्दुओं के नाम पर। इस्लाम तो अल्लाह का सच्चा धर्म है और इसी लिए वह अल्लाह के धर्म का मूल सिद्धान्त (अल्लाह की इच्छा के सम्मोख सम्पूर्ण समर्पण) का प्रतिनिधित्व करता है। अरबी भाषा के शब्द (इस्लाम) का अर्थ हैः आज्ञा पालन करना तथा उपदेश देने वाले की बात बिना शंका के मान लेना। अर्थात अल्लाह का अनुसरण करना और उसके समक्ष सम्पूर्ण समपर्ण कर देने को इस्लाम कहते हैं। अब जो भी व्यक्ति ऐसा करे उसे मुस्लिम कहा जाता है, इस्लाम के शाब्दिक अर्थ में शान्त का अर्थ भी सम्मिलित है क्योंकि शान्त वस्तुतः अल्लाह की इच्छा के सम्मुख सम्पूर्ण समर्पण का दल ही तो है।

इस प्रकार यदि देखा जाये तो इस्लाम कोई नया धर्म नहीं है जिसे महा ईशदूत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने अरब में सातवीं शताब्दी ईसवी में सर्वप्रथम

स्थापित किया हो बल्कि यह अल्लाह का सच्चा धर्म है जिसको उस समय उसके अन्तिम रूप में बफिर से व्याख्या की गयी थी।

इस्लाम ही वह धर्म है जिसकी शिक्षा दूत हज़रत आदम को दी गयी थी। जो कि मानव जाति के आदि पुरुष थे और अल्लाह के पहले संदेशवाहक भी। अल्लाह ने मानव जाति के लिए जितने भी संदेशवाहक भेजे हैं,उन सबका धर्म ईस्लाम ही था अल्लाह के इस सच्चे धर्म का नाम बाद की मानव जाति में से भी किसी ने नहीं रखा था, जैसा कि अल्लाह ने अपने अन्तिम वह्य(प्रकाशन)अर्थात र्कुआन में बयान किया है। ईश्वरीय वाणी वहस की अन्तिम पुस्तक कुरआन में अल्लाह कहता हैः--(आज के दिन हमने तुम्हारे लिये तुम्हारे धर्म को पूरा कर दिया, अपनी पूरी कृपा दृष्टि की और तुम्हारे लिए धर्म के रूप में इस्लाम को चुन लिया) (सूरहः अल माईदह.३)

हम यह बात ऊपर जान चुके हैं कि जो किताब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारी गई उसका नाम कुरआन है, जो अल्लाह की ओर से है। उसमें किसी मनुष्य के ओर से कुछ नहीं है। और जैसे अल्लाह के ओर से जिस रूप उतरी थी वैसे के वैसे आज भी वह पवित्र ग्रन्थ मौजूद है, जिसका वर्ण हम पूर्ण ही कर चुके हैं।

दिव्य कुरआन क्या है ?

किसी धार्मिक ग्रन्थ की आज्ञाकारी के लिए सब से प्रथम यह देखना चाहिये कि वह स्वयं अपने विषय में क्या कहता है । इसलिये अब आईये देखते हैं कि कुरआन अपने विषय में क्या कहता है ?

१. यह अल्लाह के ओर से उतारा गया है । शुभ कुरआन में है (हे नबी ! हम ही ने तुम पर कुरआन एक विशेष ढंग से उतारा) (सूरह दहर२३)

२. कुरआन एक ऐसा धर्मशास्त्र है कि सारे मनुष्य मिलकरभीवैसा ग्रन्थ नहीं बना सकते।(सूरह बनी इस्रईल८८)

३. कुरआन को अल्लाह ने अरबी भाषा में उतारा (सूरह शूरा.७)

४. कुरआन में स्वास्थ और दयालुता है । (सूरह बनी इस्रईल८२)

५. कुरआन इस पृथवी पर अल्लाह की वाणी है, जिसमें उसने पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्य के उत्तरदायित्व तथा अधिकार होने को खोल खोल कर बयान किया है ताकि वह लोक प्रलोक में सफल रहे, प्रन्तु देखने में यही आया है कि वह इन सब बातों से अनभिज्ञ पड़ा हुआ है । जबकि कुरआन की महानता यह है कि यदि पर्बत जैसी महान वस्तु

में भी प्राण होता और उसको कुरआन दिया जाता तो वह काँपने लगता।

६. कुरआन की शिक्षायें संसार में रहने वाले सारे मनुष्यों के लिये है।

७. कुरआन ईश्वर की महान सत्ता को विभिन्न रूपों में प्ररस्तुत करता है। वह यह वास्तविक्ता अति स्पष्ट शब्दों में ब्यान करता है कि पृथ्वी और आकाश में जो कुछ भी है सबको उसी ने बनाया है। इसका मूल उद्देश्य एक ईश्वर की उपासना है। यही सम्पूर्ण संदेशटाओं की शिक्षा थी। कुरआन विभिन्न प्रमाणों द्वारा सिद्ध करता है कि इस संसार को बनाने और चलाने वाला जब एक है तो वही वास्तविक पूज्यनीय भी है।

८. कुरआन मूल रूप से एक अल्लाह पर विश्वास करने का आदेश देता है।

९. कुरआन इस बात की पुष्टि करता है कि ईश्वर ने हर जाति में अपने ईशदूत भेजे जिन्होंने ईश्वर की शिक्षा लोगों तक पहुँचाई।

१०. कुरआन सतकर्मों और ईश भय के कामों में एक दूसरे की सहायता करने और दुषकर्मों तथा किसी पर अत्याचार करने में सहायक बनने से रोकता है।

११. कुरआन माता पिता की सेवा करने का आदेश देता है। इसके अतिरिक्त कुरआन की असंख्य विशेषतायें हैं जो कुरआन का ज्ञान रखने वाला ही जान सकता है।

इस्लाम की कुछ विशेषतायें

अब तक जितनी बातैं लिखी जा चुकी हैं उन से इस्लाम की बहुत सारी विशेषताओं का ज्ञान आप को प्रप्त होचुका है। प्रन्तु इस सच्चे धर्म की इतनी अधिक विशेषतायें हैं जिन्हें यादि एकत्रित किया जाये तो एक बड़ी पुस्तक बन सकती है। हम आप को अधिक जानकरी देने के लिये कुछ विशेषताओं का वर्ण कर रहे हैं।

१. इस्लाम का वास्तविक संदेश यह है कि अल्लाह और उसकी सृष्टि दो भिन्न भिन्न अस्तित्व हैं न तो अल्लह अपनी सृष्टि में प्रवेश किये हुये है और न ही उसका कोई अंश है,जो अकेश्वर है और उसका कोई भागीदार नहीं है। जन्मदेना और उपदेश देना उसी का अधिकार है। तथा इस्लाम इस बात को नकारता है कि हर जगह पर सृष्टिकर्ता अपनी सृष्टि के भीतर आत्मस्वरूप व्याप्त है या यह कि वह अपनी सृष्टि के किसी रूपान्तर में व्याप्त था। और सृष्टि पूजा की कोई मान्यता नहीं है। भले ही इस पूजा को सृष्टि के माध्यम से ईश्वर की उपासना का नाम ही क्यों न दिया जाये। इसी लिये इस्लाम का संदेश यह है कि केवल अल्लाह

ही की उपासना की जाये और उसकी सृष्टि की पूजा (प्रत्यक्ष या परोक्ष) किसी भी रूप में न की जाये ।

२. इस्लाम समानता की शिक्षा देता है, इस में ऊंच नीच,जात पात छुवा छूत नहीं है । अल्लाह ने सारे लोगों को एक ही पुरुष.स्त्री (आदम तथा हव्वा अलैहिस्सलाम) से जन्म दिया है तथा जातियाँ और प्रजातियाँ इस लिये बनाई है ताकि हम आपस में एक दूसरे को पहचानें अन्यथा हम सब एक ही माता पिता की संतान हैं । अभिप्राय यह है कि किसी के मात्र जाति तथा वंश के आधार पर कोई गर्व करने का अधिकार नहीं रख्ता क्यों कि प्रत्येक का वंशक्रम आदरणीय आदम ही से मिलता है । और अनेक जातियों उपजातियों तथा परिवारों का विभाजन मात्र पहचान के लिए है । ताकि आपस में नाते जोड़ें । इसका उद्देश्य परस्पर प्रधानता दिखाना नहीं, जैसा कि दुर्भाग्य से जाति तथा वंश को प्रतिष्ठा का कारण तथा आधार बना लिया गया है जबकि इस्लाम ने आकर इसे मिटाया है । अल्लाह की दृष्टि में हम सब में वह सर्व सम्मानित है जो सबसे अधिक अल्लाह से डरने वाला हो ।

इसी लिये जो इस्लाम के आधारों पर ध्यान देगा उसे ज्ञान हो गा कि इस्लाम में जितनी भी उपासनाओं का आदेश दिया गया है,सब में समानता है । आप केवल मुसलमानों की नमाज़ कोलें,इसमें सारे मुसलमान निर्धन ,धनवान ,काला, गोरा, सम्मानित,हीन राजा,प्रजा सब के सब दिन और रात में

पाँच समय मस्जिद में एक ही पंक्ति में खड़े हो कर अल्लाह की उपासना करते हैं । इसी प्रकार हज्ज तथा रोज़ह है सब के लिये एक ही आदेश है । जात पात के आधार पर इस्लाम में कोई अन्तर एवं भेद भाव नहीं हैं । सारे मुसलामान एक ही थाली में बैठ कर खाते हैं ।

३.इस्लाम धर्म ने,बुद्धि,प्राण,संपत्ति,आदर तथा मान मर्यादा एवं वंश की रक्षा का प्रबंध किया है । इसी लिये अल्लाह ने धर्म को सही रखने तथा परिवर्तन और अयोग्य के हवाले से सुरक्षित करने के लिये दूतों को भेजा तथा पुस्तकें उतारीं । और हर उस वस्तु से जो मनुष्य की बुद्धि पर पर्दा डाल दे अथवा उसको व्यर्थ या पथभ्रष्ट कर दे,इस्लाम ने ऐसी सारी चीज़ों से रोका है । चाहे वह खायी जानी वाली वस्तु हो अथवा पी जाने वाली, वह सब अवैध है जैसे शराब तथा जुआ और भेंट जो देवी व देवताओं को दी जाती हैं । इसी प्रकार हर वह वस्तु जो मनुष्य के जीवन को हानि पहुँचाएं, इस्लाम ने उसको अवैध किया है । इसी लिये किसी मनुष्य के लिए वैध नहीं है कि वह आत्महत्या या शरीर को हानि पहुँचा कर अपने आप पर अत्याचार करे,इसी प्रकार दूसरों पर भी अत्याचार करना अवैध है । इसी लिये हत्या में प्रतिहत्या का नियम बनाया है । अर्थात प्रतिकार का नियम जो लोगों के प्राणों की रक्षा के लिये है ।

इस्लाम आदर तथा मान मर्यादा की रक्षा चाहता है । किसी के लिए उचित नहीं है कि वह दूसरों को अपनी मर्यादा

पर आक्रमण करने का अवसर दे इसी प्रका उसके लिये दूसरों की मर्यादा को भंग करना भी वैध है ।

इस्लाम ने यह नहीं कहा है कि सन्नयासी बनकर जंगल पहाड में जीवन बिताई जाये बल्कि नोकरी चाकरी करने तथा धन कमाने को एक धार्मिक लक्ष्य बताया है,इसी प्रकार उसकी रक्षा करने का भी आदेश दिया है ।

३. इस्लाम ने आपस में बन्धुत्व एवं भाई चारगी का आदेश दिया है । अतः इस संसार के सारे मुसलमान आपस में एक दूसरे के भाई हैं । शुभ कुरआन में इस प्रकार कहा गया है :--

(समस्त मुसलमान भाई भाई हैं तब अपने दो भाईयों में मिलाप करा दिया करो तथा अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम पर कृपा की जाये) (सूरह हजरात : १०)

एक अन्य स्थान में है :--

(मुसलामान पुरुष व स्त्री एक दूसरे के (पक्षपाती सहायक तथा)मित्र हैं ..) (सूरह तौबह : ७१)

मुसलमान एक दूसरे के मित्र सहायक तथा दुख के साथी हैं जिस प्रकार अन्तिम दूत मुहम्मद सल्लाहु अलैहिवसल्लम ने शिक्षा दिया है (एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये एक दीवार के समान है जिसकी एक ईंट दूसरी ईंट की मज़बूती का साधन है।)तथा मोमिन का उदाहरण आपस

में एक दूसरे के साथ प्रेम करने तथा कृपा करने में एक शरीर की भाँति है कि जब शरीर का एक अंग को दर्द होता है तो सारे शरीर को बुखार हो जाता है तथा सजग रहता है)

इस्लामी इतिहास का अध्ययन करने वाला इसको आसनी से देख सकता है कि इस्लाम ने अपने मानने वालौं को किस प्रकार एक दूसरे के साथ प्यार व प्रेम तथा एक दूसरे की आवश्यकता पूरी करने का अदेश दिया है। और कहा है कि मुसलामान अपितु स्वयं अपने ऊपर दूसरों को प्राथमिकता देते हैं चाहे स्यवं उनको कितनी ही अधिक आवश्यकता क्यों न हो।

४. केवल इस्लाम ही ने महिलाओं को पिता की सम्पत्ति में उत्तराधिकारी बनाया। तथा उसकी आदर करते हुये उस की महिमा एवं वैभव को उच्चतम किया और उसको निरापद प्रिय एवं अनुकरण के योग्य माता बनाया। और माता की अनुकरण को पिता के अनुकरण पर प्रमुखता दिया। एक आदमी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहा कि लोगों में मेरे अच्छे व्यवहार का सब से अधिक कौन अधिकारी है? आप ने कहा तेरी माँ! उसने कहा फिर? आपने कहा तेरी माँ! उसने कहा फिर? आप ने कहा तेरी माँ! उसने कहा फिर ? आप ने कहा तेरा पिता।

इसी प्रकार पत्नी की महिमा एवं वैभव को उच्चतम किया तथा उस के सम्मान की रक्षा किया। उस मनुष्य को

सब से अच्छा कहा जो अपनी पत्नी के साथ अच्छा व्यवहार करे। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहाः तुम लोगों में सब से अच्छा वह है जो अपनी पत्नी एवं परिवार के लिये अच्छा हो और मैं तुम लोगों में अपने परिवार के लिये सब से अच्छा हूँ।

इस्लाम ने नारियों को महत्व पूर्ण स्थान दिया है। तथा उनको ऐसे ऐसे अधिकार दिया है जो किसी और धर्म में नहीं मिलता है। इस्लाम ने औरतों के साथ अन्याय न करते हुये उनको पूर्ण स्वतंत्रता दिया है। तथा उन के ऊपर किसी प्रकार अत्याचार को अवैध कहा है। हम निम्न में उदाहरण के लिए कुछ चीज़ै लिख रहे हैं जिस से आप इसका अनुमान कर सकते है कि इस्लाम में नारियों का क्या महत्व है।

१. इस्लाम ने विवाह के अवसर पर स्त्रियों को महर(जो राशि विवाह के लिए निर्धारित हो)इच्छानुसार देने का आदेश दिया है। और यह उसका अधिकार है जिसे पती स्यवं बिना उसकी इच्छा के कुछ नहीं खा सकता। इसी प्रकार पतनी के सारे जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने का उत्तरदायी उसका पती है। चाहे पत्नी धनवान ही क्यों न हो। पत्नी की कोई उत्तरदायित्व नहीं है कि वह पती के होते हुए पती और उसके संतान के खर्च बर्च का प्रबन्ध करे। उसका कार्य घर में रहकर संतानों की देख रेख तथा घर के भीतर कार्य भार संभालना है।

२. इस्लाम ने पुत्रियों को अपने पिता के धन में भ ागी दार किया है, संतान के विषय में इस्लाम आदेश देता है कि एक पुत्र का भाग दो पुत्रियों के समान है, यदि केवल पुत्रियाँ हों और दो से अधिक हों तो उन्हें उत्तराधिकार के माल में से दो तिहाई मिले गा, और यदि एक ही लड़की हो तो उसके लिए आधा है और मृतक के माता पिता में से प्रत्येक के लिए उसके छोड़े हुये माल का छठा भाग है, यदि उस मृतक की संतान हो, यदि संतान न हो और माता पिता उत्तराधिकारी हों तो फिर उसकी माँ के लिए तीसरा भाग है,यदि मृतक के कोई भाई हो तो उसकी माँ का छठा भाग है। इसी प्रकार पती के देहाँन्त के बाद पतनी के लिए अपने पती के छोड़े हुये माल में से अगर लड़के हो तो आठवाँ भाग है और अगर संतान न हों तो उसके लिए चौथाई है।

आप ध्यान दें कि स्त्रयाँ कभी लड़की होती हैं या पतनी या माँ हर हाल में इस्लाम ने उनको अपने पिता, माँ, पती संतान के धन में भागी दार रख्खा है, यह किसी भी धर्म में नहीं पया जाता है।

इसी प्रकार इस्लाम ने औरतों की सतीत्व एवं सम्मान,और मर्यादा की रक्षा करने के लिए उसको यह अधिकार नहीं दिया है कि वह अपरिचित मनुष्यों के संग जहाँ चाहे आए जाए और उनके संग संग हर काम में भागीदार रहे, बल्कि इस्लाम ने उसे अपने शरीर का परदा करने का आदेश दिया है, और यह उत्तरदायित्व पुरुषों पर ड़ाला है ,

अतः शुभ कुरआन में है :--(अपने घरों में स्थाई रूप से टिक कर रहो तथा प्राचीन अज्ञानकाल की भाँति अपने श्रृंगार(सौंदर्य) का प्रदर्शन न करो)(सूरह अहज़ाब ३३)

अर्थात टिक कर रहो तथा अनावश्यक घर से बाहर न निकलो इसमें स्पष्ट कर दिया गया कि स्त्री का कार्य क्षेत्र राजनीति एवं शासन नहीं,आर्थिक झमेले भी नहीं,बल्कि घर के अन्दर रहकर गृहस्थी के कार्य पूरा करना है,इसी प्रकार इस में घर से बाहर जाने के शिष्टाचार बता दिये कि यदि बाहर जाने की आवश्यकता हो तो बनाव.श्रृंगार करके अथवा ऐसे ढंग से जिससे तुम्हारा बनाव श्रृगार प्रकट हो रहा हो न निकलो,जैसे बेपर्दा होकर जिससे तुम्हारा सिर, मुख, बाँह,तथा छाती आदि लोगों को दर्शन का आमन्त्रण दे,बल्कि बिना सुगंध लगाये सादे वस्त्र में पर्दे से निकलो ।

इसके अतिरिक्त औरत के लिये सेइस्लाम में और बहुत अधिकार हैं।जिनको इस्लामी विषय का विधार्थी ही भली भांति जान सकता है ।

५. इस्लाम अध्यात्मिक धर्म है ।

इस्लाम अति उत्तम स्वभाव सभ्यता,शिष्टाचार, कोमलता,उदारता,अमानत,सत्यता,सहनशीलता,श्रेष्ठता,दया कृपा,न्याय तथा अन्य नैतिक गुणों की शिक्षा देता है । इस्लाम ज्ञान एवं विद्वानों का रक्षक है । इस्लाम ही मन्त्रतन्त्र करने का धर्म है । इस्लाम ही ने मनुष्य को मानवता के पद

पर पहुँचाया, इस्लाम ही वह धर्म है जो अनुदार नहीं है। इस्लाम प्यार मुहब्बत का धर्म है। इस्लाम ही ने सत्ता में प्रजा को भागी दार बनाया। इस्लाम ही सार्वभौमिक धर्म है यह किसी विशेष समुदाय या रंग या भाषा वालों के लिये नहीं है। इस्लाम ही वह धर्म है जो सदा से है और सदा बाक़ी रहे गा। यह मिटने वाला धर्मम नहीं है। इस्लाम ही सभ्यता एवं संस्कृति का धर्म है जो सारे अत्याचार और भ्रष्टाचार को दूर करता है तथा मनुष्यता एवं देशों को प्रगति व निर्माण का मार्ग दिखाता है। और हर एक के आधार की रक्षा करता है, अतः इस्लाम नारियों को सभ्यता में सम्मान देता है और उनके सम्मान आधार को बाक़ी रखता है,इस्लाम नारियों, संतानों, माता पिता, शासन, सहायता करने और न करने,के विषय में कहता है कि.(स्त्रियों के भी वैसे ही अधिकार हैं , जैसे उन पर पुरुषों के हैं अचछाई के साथ) (शुभ कुरआन सूरह बक़रह २२८)(माता पिता के साथ उपकार करो, तथा अपनी संतान को दरिद्रता के भय से हत् न करो, हम तुम को तथा उनको जीविका प्रदान करते हैं तथा वयक्त एवं गुप्त अश्लीलता के निकट न जाओ तथा उस प्राण की जिसे अल्लाह ने मना किया है हत् न करो प्रन्तु वैधानिक कारण से तुम को उसने इसी का निर्देश दिया है ताकि तुम समझो) (शुभ कुरआन सूरह अनआम १५१)

(अल्लाह की आज्ञा पालन करो तथा ईशदूत (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)की,और अपने में से

अधिकारियों की आज्ञापालन करो) (शुभ कुरआन सूरह निसा ५९)

(स्वभाव एवं संयम पर परस्पर सहायता करो, पाप तथा अत्याचार में सहायता न करो और अल्लाह से डरते रहो निश्चय अल्लाह कठिन यातना देने वाला है)(शुभ कुरआन सूरह माइदह २)

इस्लाम पूरे संसार के हर समुदाय और हर एक के लिए वह दयालू धर्म है जिससे सारे संसार ने लाभ उठाया है और उठा रहा है चाहे जिस प्रकार भी हो।

इस्लाम का निर्देश सारे संसार के लिये है। इस्लाम सदाचार,चरित्रवान एवं शुभेच्छा का धर्म है,अतः इस्लाम ही वह पहला धर्म है जिस ने शराब,मदिरा,व्यभिचारी को गन्दा और शैतान का काम बताया है,जब्कि हिन्दुओं में भी देवी और देवताओं को प्रसन्न करने के लिये दारू व शराब का चढ़वा दिया जता है बल्कि कुछ हिन्दू समुदाय ने मदिरा का नाम गंगा जल रखा है। इस्लाम सच्चाई का धर्म है, इस्लाम ही सुन्दरता का धर्म है इसलिये इस्लाम हर वस्तु में सुन्दरता को निमत्रण करता है। इस्लाम मात्र एक अल्लाह के अपासना का अदेश देता है।

इसके अतिरिक्त इस्लाम के बहुत सारे विषेशतायें है। जिनको इस्लाम के विषय में लिखी गई पुस्तकों के द्वारा जाना जा सकता है।

क्या जवीन सीमित है ?
मृत्यु के बाद क्या होगा ?

हम ने जब से आँखें खोली हैं यह बात देख रहे हैं कि यदि किसी दिन कोई पैदा होता है तो उसी दिन किसी न किसी की मृत्यु भी हो जाती है । कितने लोग इस संसार में आए और एक निश्चित आयु बिता कर चले गये । इस से इस बात का ज्ञान होता है कि एक न एक दिन हर एक की मृत्यु होगी यहाँ सदा रहने के लिए कोई पैदा नहीं हुआ है । तथा मृत्यु वह सत्य है जिसका न कोई उपाय है और न ही कोई बुद्धिमान इसे नकार सकता है । क्यों कि हर मनुष्य इसे अपनी ऑखों से देख रहा है । किन्तु प्रश्न यह है कि ऐसा क्यों है ? वह रचयिता जिसने बड़े कर्तब्य से इस संसार को रचा, और इस में सर्वोतम रचना मनुष्य को पैदा किया जिसकी सेवा के लिए संसार की सारी चीज़ों को बनाया । वह पैदा करने के बाद क्यों एक एक करके लोगों को मृत्यु द्वारा बुला रहा है ? इसका उत्तर अल्लाह ने अपने शुभ कुरआन में इस प्रकार दिया है (अति शुभ है वह अल्लाह जिसके हाथ में राज्य है तथा जो प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखने वाला है । जिसने जीवन तथा मृत्यु को इस लिए पैदा किया कि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में से अच्छे कर्म कौन करता है तथा वह अल्लाह सर्वशक्तिशाली एवं क्षमा करने वाला है,, सूरह मुल्क १-२)

आत्मा एक ऐसी अदृश्य वस्तु है कि जिस शरीर से उसका सम्बन्ध हो जाये वह जीवित कहलाता है तथा जिस शरीर से उसका सम्बन्ध टूट जाये वह मृत्यु से जा मिलता है | अल्लाह ने यह सामयिक जीवन क्रम इसलिए स्थापित किया है ताकि वह परीक्षा ले कि इस जीवन का सही प्रयोग कौन करता है ? जो उसे ईमान तथा आज्ञापालन के लिये प्रयोग करे गा उसके लिये उत्तम फल है तथा दूसरों के लिये यातना | और यही न्याय है |

मृत्यु के बाद मृतक को अपने रचयित के पास जाना है क्यों कि हम पहले निर्जीव थे तो उस अल्लाह ने हमें जीवन दिया तथा पुनः हमें मृत्यु देगा फिर पुर्नर्जीवित करेगा फिर उसी के पास हमें लौट कर जाना है |

किसी को यह आश्चर्य हो सकता है कि क्या जब हम मर कर मिट्टी हो जायें गे या हम जल कर राख होजायें गे या हमें कोई जानवर खा लेगा तो हम पुनर्जीवित कैसे होंगे ? यह तो दूर की बात लगती है ? किन्तु किसी भी बौद्धिक आधार पर इसमें कोई असंभावना नहीं है,धरती मनुष्य के माँस, आस्थि तथा बाल आदि को गलाकर खा जाती है अर्थात उसे खंड़ित कर देती है | वह न केवल अल्लाह के ज्ञान में है बल्कि अल्लाह के पास सुरक्षित पुस्तक में भी अंकित है | इसी प्रका संसार की सारी वस्तुयें अल्लाह के अधीन और उसी की अधिकार में हैं अल्लाह उन्हैं आदेश देगा वह सब अपने भीतर से सारी चीज़ैं उगल देंगी, और

सभी अंशों को एकत्रित करके पुनः जीवन प्रदान कर देना उसके लिये कुछ कठिन नहीं है। जब उसने पहली बार बिना किसी उदाहरण के मनुष्य को पैदा कर दिया तो पुनः पुर्नजीवित करना कैसे असंमभव हो सकता है। उदाहणस्वरूप यदि हम कोई चीज़ पहले बना चुके हों और उसको तोड़ दिया जाये तो क्या हम पुनः उसको नहीं बना सकते है? क्या हम अपने ऊपर सात आकाश ऊपर नीचे नहीं देखते कि अल्लाह ने उसे किस प्रकार बिना स्तम्भ के बनाया तथा उसे शोभा प्रदान करने के लिये उस में सितारों के नग जड़ दिये उसमें कोई दरार नहीं? धरती को अल्लाह ने बिछा दिया तथा उस पर पर्वतों के कीले गाड़ दिया तथा उसमें नाना प्रकार की सुन्दरता उगा दी ताकि प्रत्येक अल्लाह के ओर लौटने वाले भक्त के लिये दृष्टि एवं बुद्धि का साधन रहे। तथा अल्लाह ने आकाश से शुभ एवं पवित्र पानी बरसाया तथा उससे बाग़ एवं कटने वाले खेत के अन्न पैदा किया तथा खजूरों के ऊँचे ऊँचे वृक्ष जिनके गुच्छे तह पर तह लटक रहे हैं। पानी से मृत्यु नगर को जीवित करदिया। अतः वर्षा से मृत्यु धरती को जीवन प्रदान कर के हरी भरी बना देता है। इसी प्रकार हमें भी मृत्यु के बाद पुनः जीवित करेगा।

इस लिए हमारा इस बात पर दृढ़ विश्वास होन चाहिये कि सभी प्राणीयों व संसार सहित सब को एक दिन

समाप्त होना है तथा अल्लाह हर प्राणी को फिर से जीवित करके उठायेगा।

हम यहाँ यह सोच सकते हैं और हमार सोचना उचित भी है कि ऐसा क्यों होगा ? हम इस ओर संकेत दे चुके है कि ऐसा इसलिए होगा ताकि सब के कर्मों का लेखा जोखा सामने आ सके। जिसने अच्छा कर्म किया होगा उसका लाभ उसी के लिए हो और जिसने बुरा कर्म किया होगा तो उसको उसके कर्मो का परिणाम दिया जाये। यहाँ यह बात भी जानना चाहिये कि सारे मनुष्य के सब कर्मों को अल्लाह लिखा रहा है और उसे सुरक्षित कर दिया गया है हिसाब के मैदान में उनके समक्ष वही अभिलेख प्रस्तुत किया जाये गा। जिसके अनुसार अल्लाह को मानने वालों तथा उसके आदेश एवं आधार के अनुसार जीवन बिताने वालों को स्वर्ग दिया जाये गा और उस पर विश्वास न करने वालों तथा उसके आदेशानुसार एवं आधारनुसार इस संसार में जीवन न बिताने वालों को नरक में झोंक दिया जाये गा।

इस विवरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि मृत्यु जीवन का अन्त नहीं है बल्कि वह सीमित जीवन और सदा रहने वाली जीवन को अलग करने वाली वस्तु है,प्रन्तु क्या सब के सब एक ही प्रकार का जीवन पाएंगे ? नहीं,निःसंदेह वह भिन्न प्रकार के होंगे। जिसने अल्लाह का अनुसारण किया उसके लिए बहुत अच्छा प्रतिशोध है। और जिसने उसकी बातों को अस्वीकार किया था उसको बड़ा दण्ड

मिलेगा | प्रलय के दिन पर विश्वास एक सच्ची आवश्यकता है इसलिए कि लोग जीवन में कुछ कार्य ऐसा करते हैं जिनका बदला एवं फल संसार में प्राप्त नहीं करपाते और न ही उसका परिणाम उनके समक्ष है तो क्या आप समझते हैं कि इस दृश्य का ऐसा ही अन्त हो जाये गा कि अत्याचारी को सज़ा न मिले तथा जिस पर अत्याचार किया गया उसको न्याय न मिले ? इसी लिए पुनः जीवन होग ताकि हर एक के कर्म का फल मिल जाये |

प्रलय के दिन पर विश्वास का लाभ यह भी है कि अच्छे लोग अच्छे कार्यों का प्रयत्न करें और बुरे लोग पाप तथा अपराध करने से बचे रहैं और इस संसार मे परीक्षा का लाभ सामने आये | इस लिये अल्लाह ने स्वंग एवं नरक बनाया है | जिसकी सूचना हर एक दूत ने दी है |

यह सोचने वाला मूर्खता में है कि हम मर जायें गे और मिट्टी में सड़ गल जाये गे | हम को पुनः जीवित नहीं किया जाये गा या ऐसा करना बहुत कठिन है | अल्लाह के लिए यह बहुत ही आसान है | अल्लाह के यहाँ देर अवश्य है अन्धेर नहीं है | वह बड़ा ही न्याय वाला शक्तिशाली है |

मेरे मित्रो ! अब इन सारी वस्तुओं को जान लेने के बाद हमें क्या करना है | हम ध्यान पूर्वक सोच लें कि हम किस उद्देश के लिये रचे गये हैं | और हमें इस स्संसार में क्यों पैदा किया गया है | और हम क्या कर रहे है ? हम

अल्लाह को पूज रहे हैं जिसका कोई प्रत्यक्ष रूप नहीं है तथा वह किसी के रूप में उपस्थित नहीं होता और वह न ही किसी का रूप धारण करता है या हम उन चीज़ो की पूजा करते हैं जिन्हें अल्लाह ने हमारी सेवा के लिये पैदा किया है और हम उनको अपना ईश्वर और भगवान मानते हैं जिनके भीतर कुछ भी शक्ति नहीं कि वह हमरा कुछ बना बिगाड़ सकें और न हीं अपने आप को लाभ दे सकें या अपने आप को हानि से बचा सकें | कहीं ऐसा तो नहीं कि हम अल्लाह को छोड़ कर अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ों कन्कड़,पत्थर, नदी, नाले चंद्रमा, सूर्य, गाय, बैल.पेड़, पौदे,लिंग,या अपने जैसा किसी मनुष्य राम,सीता, रावण, लछमन,आदि को देवी देवता बनाकर उनके आगे सिर झुका कर, उनकी पूजा कर रहे हैं और उन पर चढ़ावे चढ़ाते हैं ? तथा उन से विन्ती करते है ? जिन्हें हम जैसे किसी मनुष्य ने बनाया है , जो न बोल सकते हैं और न सुन सकते और न ही हमारी किसी बात का उत्तर दे सकते, जो हमारे आश्रित हैं बल्कि अगर कुत्ता उनके ऊपर चढ़ाई गई मिठाई खा कर उन का मुन्ह चाटे तो भी उसको भगा नहीं सकते | हम जहाँ उनको रख दें वहाँ रखे रहें , क्या ऐसी चीज़ें उपासना के योग्य या पूज्य हो सकती हैं ? थोड़ा तो अल्लाह की दी हुई बुद्धी से काम लो! हम किस की पूजा करने के लिए पैदा किये गये हैं ? और हम क्या कर रहे हैं ? क्या हम सब का अल्लाह जो हमारा रचयिता और पैदा करने वाला है इनकी पूजा करने से प्रसन्न हो कर हमको स्वंग देगा या हम से अप्रसन्न

होकर हम को नरक देगा ? अब हम निर्णय कर लें कि हम को क्या चाहिये ? अगर हम स्वर्ग चाहते हैं तो हम विश्वास के साथ यह पढें अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाह व अशहदु अन्न महम्मदर्रसूलुल्लाह ।

अर्थातः में गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सच्चे संदेष्टा हैं तथा इस के आधार को खोज कर इसी के अनुसार जीवन बितायें । इसी से अल्लाह जो अकेला है,जिसका उसके किसी भी कार्य में कोई भगीदार नहीं है प्रसन्न होगा ।

हम इसी के लिए पैदा किये गये है । अल्लाह हम सब को अपना सत्य मार्ग दिखाये तथा उसी पर चलाये ।